श्री प्राणनाथ जी वाणी

|| प्रेम खोल देवे सब द्वार ||

श्री कृष्ण त्रिधा लीला

श्री प्राणनाथ जी वाणी

|| प्रेम खोल देवे सब द्वार ||

श्री प्राणनाथ जी वाणी सेवा परिवार

श्री प्राणनाथ जी वाणी
|| प्रेम खोल देवे सब द्वार ||

धाम धनी जी की मेहर से प्यारे सतगुरु **श्री राजन स्वामी जी** के अनुपम टीका से उद्धृत **'श्री प्राणनाथ जी वाणी'** यूट्यूब चैनल पर हुई **'श्री कृष्ण त्रिधा लीला'** की अद्धभुत चर्चा को सुनकर हमारे प्यारे सुंदरसाथ जी द्वारा लेखन की अति सुंदर प्रेमपूर्ण सेवा की गयी है।

> "**त्रिविध लीला जानिए, जानो प्रियतम नाम।**
> **पिउ की वाणी कह रही, चल मूल मिलावा धाम।।**"
>
> **शशि किरण**

श्री कृष्ण त्रिधा लीला चर्चा – सोनिया जुनेजा (ऑस्ट्रेलिया)
लेखन की सेवा – ईशा अस्थाना (होशियारपुर)
प्रूफ रीडिंग की सेवा – दुष्यंत तोमर (मेरठ), कमलेश भाई पटेल (हिम्मतनगर)
आप सभी निस्वार्थ, अथक व निरंतर **सेवाभावी सुंदरसाथ जी** के चरणों में
कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

कॉपीराइट

कॉपीराइट © 2024 **श्री प्राणनाथ जी वाणी**
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी अंश की छपाई, पुनरुत्पादन या किसी अन्य रूप में उपयोग बिना अनुमति के निषिद्ध है।

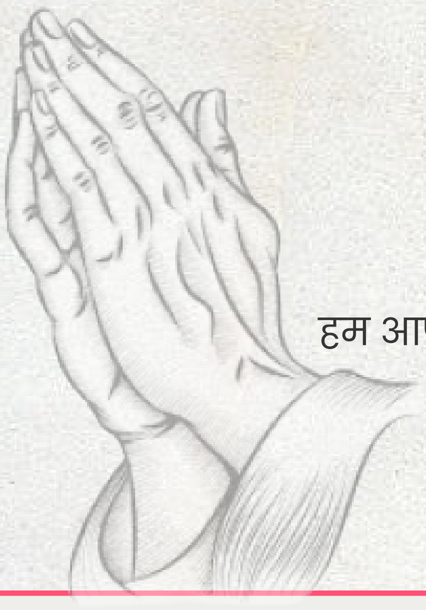

संक्षिप्त परिचय पढ़ने और समय
निकालने के लिए **धन्यवाद**।
हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप हमें अपनी ईमानदार प्रतिक्रिया दें।

आपकी चरण-रज
श्री प्राणनाथ जी वाणी परिवार

प्रस्तावना

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक।।
श्री किरंतन प्र.82 चौ.5

अक्षरातीत का हृदय ज्ञान का अनंत सागर है। उस सागर की एक बूँद महामति जी के धाम हृदय में आकर सागर का स्वरूप बन गई और उनके द्वारा **श्री तारतम वाणी** का ख़ज़ाना हम सबको मिल गया। प्यारे सतगुरू सरकार श्री जी ने वाणी का टीका कर उस अखंड धरोहर को पाने का मार्ग सरल कर दिया। फिर धाम धनी की मेहर से प्यारे सतगुरू श्री राजन स्वामी जी ने ज्ञान के गहरे सागर में कुशल गोताखोर की भांति गोता लगाकर श्री मुख वाणी टीका भावार्थ सहित किया और आज तक छुपे हुए सभी गुह्य रहस्यों को खोल कर हम सबका जीवन धन्य कर दिया।

धाम धनी की मेहर से श्री कृष्ण त्रिधा लीला को जानने की बढ़ती हुई जिज्ञासा को श्री राजन स्वामी जी द्वारा किये गए श्री तारतम वाणी के टीका ने शांत किया और पहली बार पता चला कि ज्ञान में भी कितना विलास निहित होता है। श्री कृष्ण त्रिधा लीला के भेद पूज्य श्री राजन स्वामी जी की चर्चाओं और उनके ही द्वारा किये गए श्री रास, श्री प्रकाश हिंदुस्तानी और श्री कलश हिंदुस्तानी के टीका से समझ में आने लगे। 'श्री प्राणनाथ जी वाणी' ज़ूम व यूट्यूब चैनल के माध्यम से सभी सुंदरसाथ जी के साथ चर्चा होने लगी। धनी की मेहर से ब्रज और रास की लीलाएँ जानने के पश्चात् माया की गतिविधियों से हटकर ब्रह्मवाणी से प्रेम होने लगा। जैसे ही कुछ नया पता लगता था, आनंद का पारावार नहीं रहता था। हम सब सखियों का हृदय बृज और रास की लीलाओं में ज्ञान दृष्टि से ही आनंद लेने लगा।

ब्रजलीला (पूरी नींद की लीला) में श्री कृष्ण जी के स्वरूप की असल पहचान न होते हुए भी हम गोपियों के रोम-रोम में कृष्ण बसते थे। योगमाया में हुई रास (आधी नींद आधी जागृति की अवस्था) में उथले वचन, रामतों का आनंद, अंतर्ध्यान की पीड़ा, ब्रह्मानंद व भजनानंद स्वरूप के भेद, प्रियतम अक्षरातीत की पहचान होने पर वहाँ जाने की इच्छा जहाँ कभी जुदाई न हो, इन लीलाओं को हृदयंगम करके ही मूल मिलावा की चितवन की राह सरल हो जाती है।

विरह की हवा कैसे मंद पड़ी प्रेम की अग्नि को प्रज्ज्वलित करती है, यह सब गोपियों की रहनी से सीखने को मिलता है। पहले तो अति सुंदर व मनमोहक रूप (श्री कृष्ण जी) धरकर प्रियतम बाँसुरी बजाते थे और आज भी धाम धनी श्री तारतम वाणी की बाँसुरी हर दिशा से बजा रहे हैं। आइये सभी भेद भाव भुलाकर सभी सुंदरसाथ जी को संग ले गोपियों सरीखा प्रेम भाव दिल में लेकर अपने प्रियतम को पहचानें तथा प्रेम डगर पर कदम बढ़ाएँ। स्वयं प्रेम का सूत कातें और सबको कातने के लिए प्रेरित करें। सेवा और समर्पण के भावों से परिपूर्ण होकर जागें और जगाएँ। प्रेम की ध्वजा बनकर पूरे ब्रह्मांड में प्रेम का संदेश फैलाएँ।

चर्चा के सभी वीडियो बारम्बार देखकर उनको लिखित रूप देने की, विभिन्न भाषाओं में अनुवाद, पीडीऍफ़ को पुस्तक का आकार देने और अनेकों बार प्रूफरीडिंग करने की अथक व अनमोल सेवा करने वाले सभी सुंदरसाथ जी के चरणों में प्रेम प्रणाम जी। श्री राजजी की मेहर तले आप हमेशा सेवा कार्य में संलग्न रहकर आत्म-जागृति के मार्ग को सुगम बनाएँ।

आपकी चरण-रज

सोनिया जुनेजा

अनुभूमिका

प्रिय सुन्दरसाथ जी ! सच्चिदानंद परब्रह्म की असीम मेहर दृष्टि से 'श्री कृष्ण त्रिधा लीला' ग्रन्थ आप सभी के समक्ष रखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है | धनी को पाने के लिए जिस समर्पण, विरह तथा अनन्य प्रेम की आवश्यकता है, इस ग्रन्थ में उस पर थोड़ा सा प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है | मुझ जैसे अल्पज्ञ को शब्दों का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है, और इस कार्य को करना मेरे लिए अत्यंत कठिन था, किन्तु मेरे सद्गुरु 'धर्मवीर जागनी रत्न सरकार श्री जगदीश चंद्र जी' एवं 'श्री राजन स्वामी जी' की कृपा दृष्टि से यह कार्य सुगमता पूर्वक सम्पन्न हो पाया |

जब पहली बार यूट्यूब (youtube) के माध्यम से 'श्री कृष्ण त्रिधा लीला' को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ, तब धनी जी की प्रेरणा से इसे लिखित रूप देने का विचार मन में आया | 'श्री राजन स्वामी जी' के द्वारा किये गए 'श्री कुलजम स्वरूप वाणी' के टीका को आधार मानकर 'सोनिया जुनेजा जी' ने यूट्यूब चैनल 'श्री प्राणनाथ जी वाणी' पर 'श्री कृष्ण त्रिधा लीला' को बहुत ही सरलता से सब सुन्दरसाथ को समझाने का अत्यधिक प्रशंसनीय प्रयास किया | जिससे कि वह सब सुन्दरसाथ को 'श्री कृष्ण त्रिधा लीला' की गहराई तक ले गयीं |

इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से निम्न विषयों पर विवेचना की गयी है :-

1. माया के खेल में आने के कारण और महाकारण |
2. श्री अक्षरब्रह्म जी के अंतःकरण के भाग |
3. ब्रजलीला, रासलीला और प्रतिबिम्ब लीला के गुह्य भेद |
4. ब्रह्मानंद और भजनानंद स्वरूप में अंतर |
5. अपने निजघर और धनी (पूर्णब्रह्म परमात्मा) से अपने मूल सम्बन्ध की पहचान |

श्री कृष्ण त्रिधा लीला को समझते हुए एक बात का दृढ़ विश्वास हो गया कि धनी हर पल अपनी ब्रह्मात्माओं के साथ ही होते हैं | जैसे कि पहले ब्रजलीला में, फिर रासलीला में और अब इस जागनी ब्रह्माण्ड में भी धनी सूक्ष्म रूप से अपनी हर ब्रह्मात्मा के हृदय में विराजमान हैं | 'श्री मुख वाणी' के इल्म से, जिन्हें अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत की पहचान हो जाती है, वे धनी की चाहत में अपने को समर्पित कर देते हैं | इस प्रकार जो भी सुन्दरसाथ अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत पर समर्पण की दृष्टि से जितने कुर्बान होंगे, उनको उतना ही अधिक आत्मिक आनंद मिलेगा | उनकी सुरता (आत्मिक दृष्टि) यहाँ बैठे-बैठे ही चितवन के द्वारा परमधाम के पच्चीस पक्षों का आनंद ले पाएगी |

सप्रेम प्रणाम जी !

आशा है कि यह ग्रन्थ सुन्दरसाथ जी के लिए रुचिकर होगा | सुन्दरसाथ जी यह ग्रन्थ लिखने का मेरा प्रथम प्रयास है, इसलिए जाने-अनजाने में होने वाली त्रुटियों को क्षमा करने एवं सूचित करने का कष्ट करें |

संक्षिप्त परिचय पढ़ने के लिए और समय निकालने के लिए **धन्यवाद**।
मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप मुझे अपनी ईमानदार प्रतिक्रिया दें।

आपकी चरण-रज

ईशा अस्थाना

शुरू करने से पहले जानने योग्य बातें !

सतस्वरूप ब्रह्म= अहंकार

केवल ब्रह्म = बुद्धि

सबलिक ब्रह्म = चित्त

महाकारण

कारण

सूक्ष्म

सबलिक ब्रह्म का स्थूल = अव्याकृत ब्रह्म का महाकारण

अव्याकृत ब्रह्म

कारण

सूक्ष्म

स्थूल

योग माया

(श्री अक्षर ब्रह्म के चतुष्पाद)

सतस्वरूप ब्रह्म= अहंकार

निर्मल चैतन्य - प्रथम बहिश्त (आखिर)

ब्रह्मसृष्टियों के जीवों का मुक्ति स्थान

महाकारण - दूसरी बहिश्त (आखिर)

अक्षर ब्रह्म की सुरताओं और उनके जीवों का मुक्ति स्थान

केवल ब्रह्म = बुद्धि

केवल ब्रह्म
(रास खेली गई)

सबलिक ब्रह्म = चित्त

निर्मल चैतन्य - तीसरी बहिश्त महम्मदी (अव्वल)

अखंड रास   महाकारण   चौथी बहिश्त (अव्वल)

अखंड ब्रज   कारण   पाँचवीं बहिश्त (अव्वल)

सूक्ष्म   चिदानंद लहरी

अव्याकृत ब्रह्म = मन

अव्याकृत ब्रह्म का तुरियातीत

सबलिक ब्रह्म का स्थूल = अव्याकृत ब्रह्म का महाकारण

कारण

सूक्ष्म

स्थूल

योग माया

शुरू करने से पहले जानने योग्य बातें !

महाकारण

रास लीला का प्रतिबिंब तुरियातीत

शुद्ध महाकारण

ब्रज लीला का प्रतिबिंब शुद्ध कारण वेदऋचा सखियों का मुक्ति स्थान

शुद्ध सूक्ष्म छठी बहिश्त - मलकूती (अव्वल)

सुमंगला शक्ति शुद्ध स्थूल अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं का स्थान
(विष्णु जी, शिव जी, सनकादिक जी, शुकदेव जी, कबीर जी)

कारण

सात शून्य सातवीं बहिश्त - महर्षियों की (आखिर)

सूक्ष्म

काल निरंजन

स्थूल

निर्मल चैतन्य

ज्ञान शक्ति गायत्री प्रणव ब्रह्म

चारों वेदों का स्थान रोधिनी शक्ति

प्रणव के निर्मल चैतन्य में आठवीं बहिश्त (आखिर)
(संसार के जीवों का मुक्ति स्थान)

अव्याकृत ब्रह्म

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 10

खेल में आने के कारण और महाकारण

अध्याय 2 15

ब्रजलीला

अध्याय 3 19

सखियों का कालमाया से योगमाया में प्रस्थान

अध्याय 4 24

रास का वर्णन

अध्याय 5 29

श्री राजजी के अंतर्ध्यान की लीला

अध्याय 6 34

अंतर्ध्यान के पश्चात् की लीला

अध्याय 7 41

अखंड ब्रजलीला व रासलीला के रहस्य

अध्याय 8 46

प्रतिबिम्ब लीला के गुह्य भेद

अध्याय 9 52

श्री कृष्ण त्रिधा लीला के तीन भाग

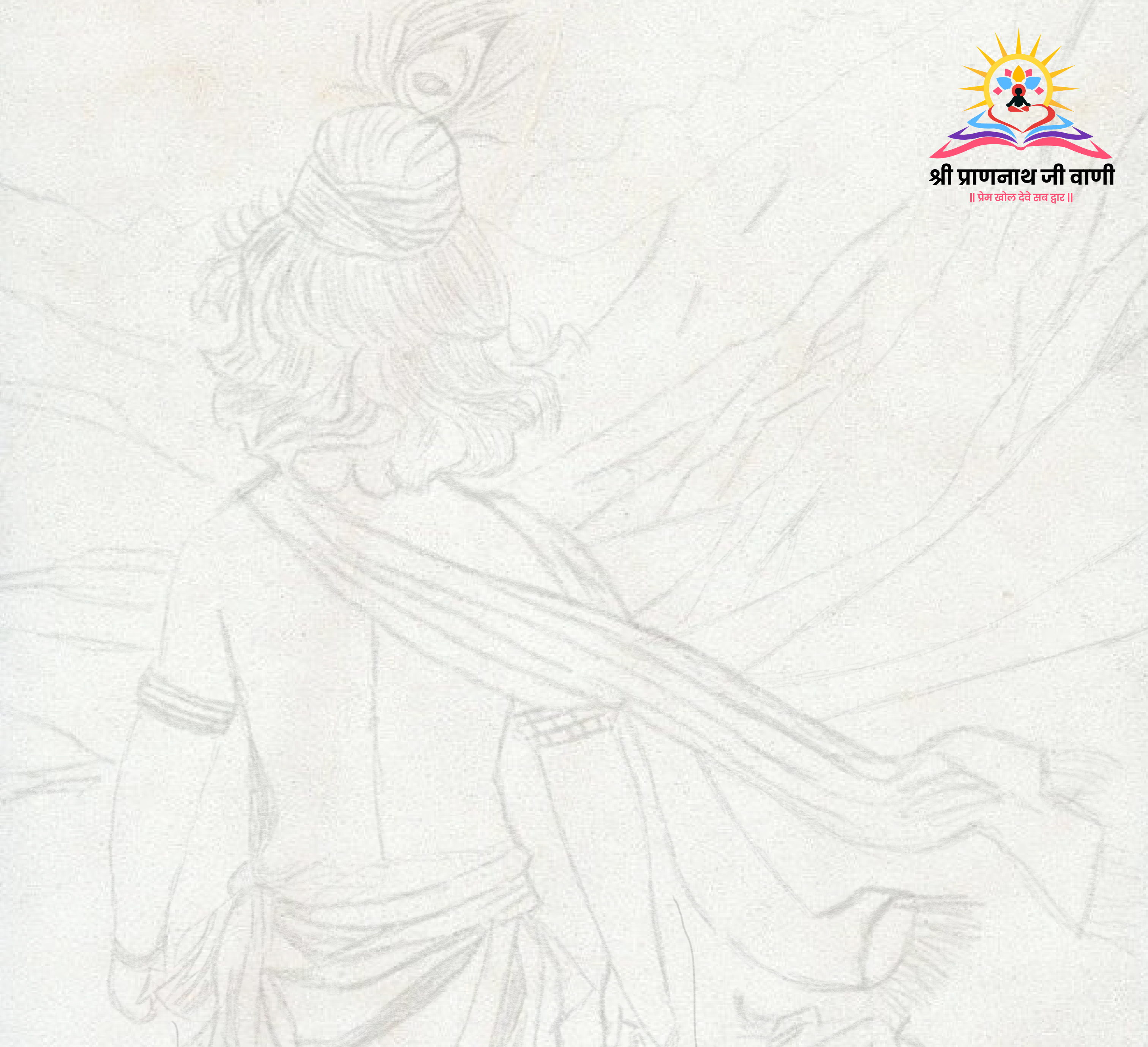

अध्याय 1

खेल में आने के कारण और महाकारण

अध्याय 1 : खेल में आने के कारण और महाकारण

श्री कृष्ण त्रिधा लीला का अर्थ है - श्री कृष्ण जी के तन से होने वाली अलग अलग प्रकार की तीन लीलाएं और इसके दौरान उनके तन में किस किस शक्ति ने कार्य किया | श्री राजजी ने अपने दिल में इतना लाड भर लिया है कि वह अपनी आत्माओं को अपने हृदय का वह कोना दिखाना चाहते हैं, जो आज तक अनछुआ ही रह गया | जब श्री राजजी ने 'मेहर का दरिया' दिल में लिया तब रूहों के दिल में इस खेल को देखने का ख्याल उपजा |

परमधाम में श्री राजजी अपनी आनंद अंग श्री श्यामा जी, सखियों और अपने सत अंग श्री अक्षरब्रह्म जी के साथ रहते हैं | न तो उनकी आनंद स्वरूपा श्री श्यामा जी और सखियों को उनके सत अंग श्री अक्षरब्रह्म जी के बारे में पता था और न ही श्री अक्षरब्रह्म जी को श्री श्यामा जी और सखियों के बारे में | इस खेल में आने के महाकारण और कारण इस प्रकार हैं:

महाकारण :-
महाकारण का अर्थ है कारण के भी पीछे छुपा हुआ कारण | इस खेल में आने का महाकारण था कि श्री राजजी के द्वारा अपने हृदय की आनंदस्वरूपा श्री श्यामा जी और अपनी अंगस्वरूपा सखियों को इस खेल में लाकर अपने अर्श की पातसाही और वाहेदत (एकदिली) के इश्क़ की पहचान कराना |

पहला कारण :-
श्री राजजी के द्वारा ही श्री श्यामा जी और सखियों के मन में श्री अक्षरब्रह्म जी द्वारा बनाये जाने वाले खेल को देखने की इच्छा पैदा करना | और इसके बाद श्री श्यामा जी और सखियों का इस खेल को देखने की इच्छा जाहिर करना |

दूसरा कारण :-
अपने सत अंग श्री अक्षरब्रह्म जी को भी अपने हृदय के उस आनंद की पहचान करवानी थी कि परमधाम में श्री अक्षरातीत अपनी आनंद अंग श्री श्यामा जी और सखियों के साथ क्या लीला करते हैं |

परमधाम में रहकर उस वाहेदत के इश्क़ की पहचान करवा पाना संभव नहीं था, क्योंकि श्री श्यामा जी और सखियाँ उसी इश्क़ के आनंद में डूब जातीं पर पहचान न कर पातीं। इसीलिए हमारे पिया हमें इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में लेकर आये हैं, जहाँ हमारे अर्श जैसा प्रेम है ही नहीं।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक॥
श्री खिलवत प्र. 6 चौ. 43

इस खेल को देखने का ख्याल पहले किसके दिल में आया - 'श्री अक्षरब्रह्म जी' या 'श्री श्यामाजी और सखियों के'?

परमधाम में तो केवल एक ही हृदय कार्य करता है, वो है -'अक्षरातीत का हृदय'। श्री राजजी ने जैसे ही अपने दिल में खेल दिखाने की इच्छा ली, वैसे ही श्री अक्षरब्रह्म जी के हृदय में भी यह बात आ गयी। और वाहेदत के सम्बन्ध से श्री श्यामाजी और सखियों के हृदय में भी यह बात आ गयी।

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर॥
श्री खिलवत प्र. 6 चौ. 44

श्री श्यामाजी और सखियों के मन में खेल देखने की इच्छा कैसे उत्पन्न हुई?

जब श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियों के साथ तीसरी भोम में होते हैं, उस समय रोज़ श्री अक्षरब्रह्म जी श्री राजजी के दर्शन करने चांदनी चौक में आते हैं। जिस दिन पिया ने मेहर का खेल दिखाने का ख्याल दिल में लिया, तब रुहों के दिल में आया कि यह (श्री अक्षरब्रह्म जी) कौन हैं? तब श्री राजजी से पूछने पर उन्होंने अपनी सखियों को बताया कि ये खेल बनाते हैं - 'जिस में दुःख ही दुःख है।' ये शब्द तो सखियों ने कभी वहां सुने ही नहीं थे। तो इस तरह राजजी के दिल में लेने से ही श्री श्यामा जी और सखियों के मन में खेल को देखने की इच्छा उत्पन्न हुई।

श्री राजजी ने हमें बार बार यहाँ आने से मना किया, पर हम सखियों ने तीन बार इस माया को देखने की इच्छा जाहिर की । हमने तीन बार भी इसलिए माँगा क्योंकि श्री राजजी ने हमें तीन लीलाएं दिखानी थीं :-

1. ब्रजलीला

2. रास लीला

3. जागनी लीला

श्री राजजी के मना करने पर भी जब सखियाँ नहीं मानीं, तब श्री राजजी ने सखियों को मूल मिलावे में बैठाकर, अपनी नज़र में लेकर कालमाया के ब्रह्माण्ड (ब्रज) में भेजा ।

तीन प्रकार के ब्रह्माण्ड:-

1.कालमाया:-

कालमाया के ब्रह्माण्ड में बनने वाली प्रत्येक वस्तु का नाश निश्चित है | यहाँ पर द्वैत (जीव + माया) की लीला होती है |

2.योगमाया:-

योगमाया में जिस भी वस्तु की रचना एक बार हो जाती है वह अनंतकाल के लिए अखंड हो जाती है | यहाँ पर अद्वैत की लीला होती है अर्थात ब्रह्म अपनी अभिन्न स्वरूपा चैतन्य माया के साथ लीला करते हैं |

3.परमधाम:-

परमधाम में न तो कोई वस्तु उत्पन्न हो सकती है और न ही नष्ट हो सकती है | यहाँ पर परब्रह्म ही सब रूपों में लीला करते हैं, इसलिए परमधाम को स्वलीला अद्वैत कहते हैं |

तीन प्रकार के ब्रह्माण्ड:-

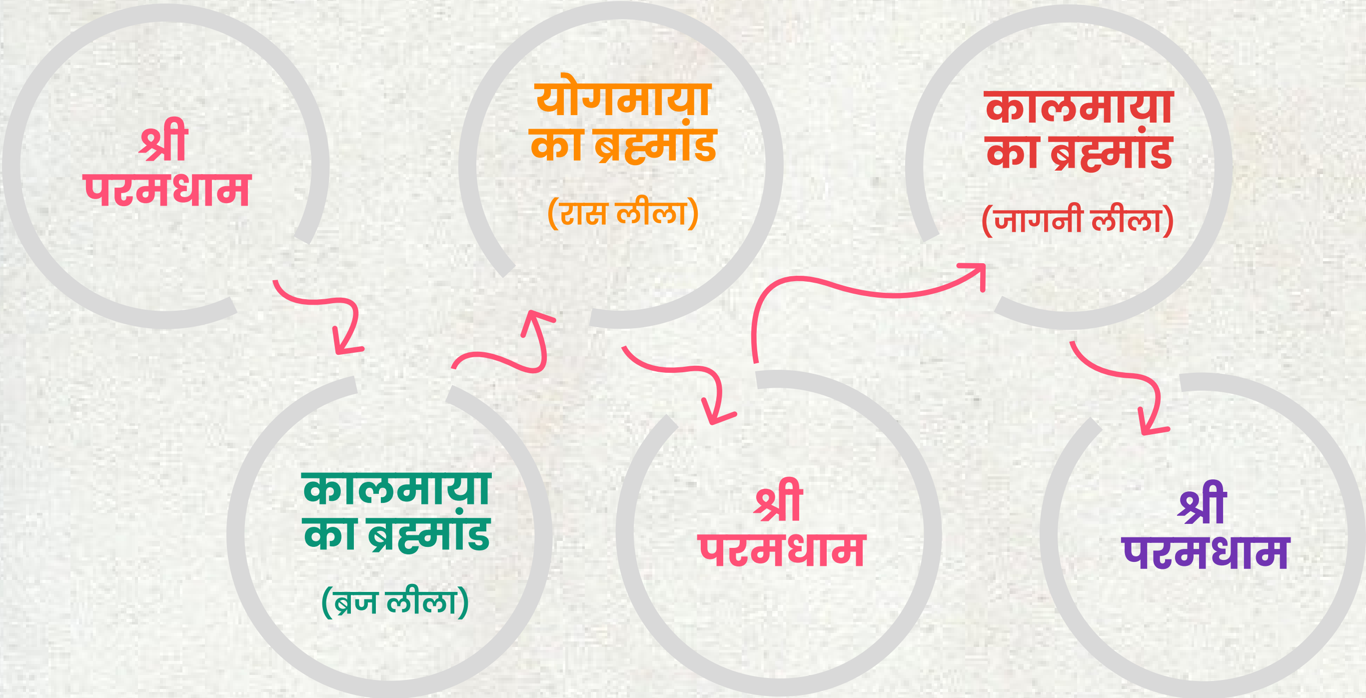

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।।
श्री कलश हिंदुस्तानी प्र. 23 चौ. 1

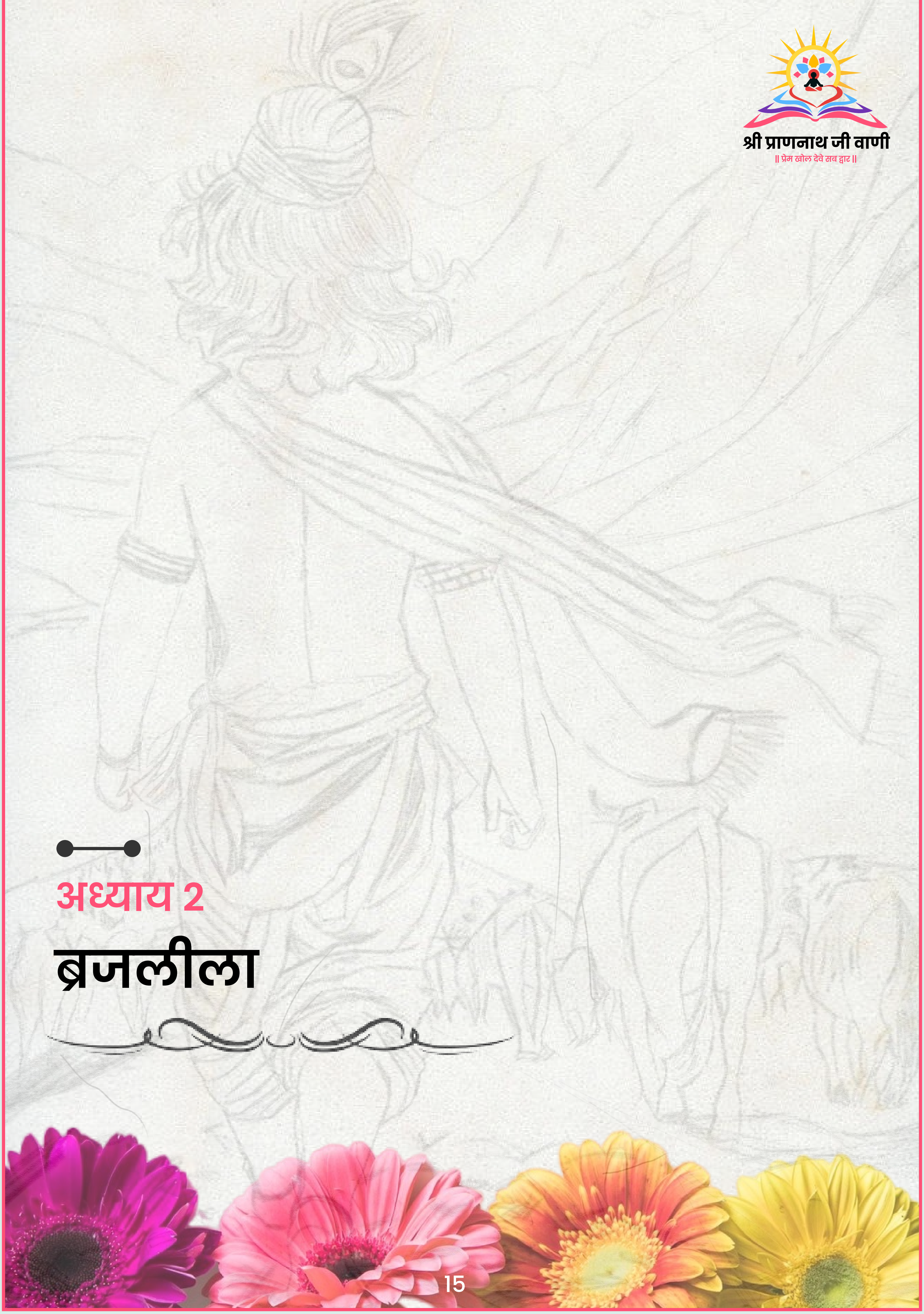

अध्याय 2

ब्रजलीला

अध्याय 2 : ब्रजलीला

सबसे पहले परमधाम से खेल देखने के लिए हम कालमाया के ब्रज मंडल में आए | ब्रज मंडल में 11 साल 52 दिन की लीला हुई | 11 साल तक प्रेम की लीला और 52 दिन जुदायगी की लीला | इस लीला में हम सब सखियाँ श्री कृष्ण जी की मोहिनी सूरत से अत्यंत प्रेम करती हैं और माया के काम निपटा कर श्री कृष्ण जी की बांसुरी की मधुर धुन सुन कर उनके पीछे दौड़ी चली आती हैं | इस लीला में प्रेममयी आनंद अवश्य है किन्तु सभी की अवस्था नींद जैसी थी, केवल हमारे धनी ही जाग्रत अवस्था में थे | ब्रज लीला पूर्णतया नींद में ही खेली गयी अर्थात न तो हमें श्री राजजी से अपने सम्बन्ध की पहचान थी और न ही अपने धाम की कोई सुध थी |

ब्रजमंडल में श्री राजजी, श्री श्यामाजी, ब्रह्मसृष्टियों, कुमारिका सखियों और अक्षर ब्रह्म जी के द्वारा धारण किये गए तन और जीव इस प्रकार हैं :-

1. श्री राज जी:-

तन का नाम :- श्री कृष्ण जी
जीव :- श्री विष्णु जी
आतम :- श्री अक्षरब्रह्म जी
आवेश :- श्री राजजी
जोश:- श्री राजजी (श्री राजजी का जोश = आवेश श्री अक्षर ब्रह्म)

2. श्री श्यामा जी:-

तन का नाम :- श्री राधिका जी
जीव :- माया का उच्च कोटि का जीव
आतम :- श्री श्यामा जी

3. ब्रह्मसृष्टियाँ:-
तन :- कालमाया के तन
जीव :- उच्च कोटि के जीव
आतम :- 12000 ब्रह्मसृष्टियों की आतम

4. कुमारिका सखियाँ:-
तन :- कालमाया के तन
जीव :- उच्च कोटि के जीव
सुरता :- 24000 ईश्वरी सृष्टियों की सुरता योगमाया से

(श्री अक्षरब्रह्म जी के द्वारा इस खेल को देखने के लिए ख़ास तौर पर योगमाया में धारण की गयी सुरताओं को ईश्वरी सृष्टि कहते हैं | इनके पास योगमाया में अलग से कोई तन नहीं हैं, इन्हें श्री अक्षरब्रह्म जी ने सुरता रूप में ही धारण किया है |)

इस तरह 11 वर्षों तक गोपियों और श्री कृष्ण जी में प्रेममयी लीला चलती रही और कुमारिका सखियाँ इस लीला को देखने का आनंद लेती रहीं, लेकिन उनके मन में भी यह इच्छा थी कि श्री कृष्ण जी उनके साथ भी ये लीला करें | इसलिए वे व्रत करती हैं कि वे भी इस लीला को खेलने का आनंद प्राप्त कर सकें | श्री कृष्ण जी कुमारिका सखियों को वचन देते हैं कि वे भी इस लीला को अवश्य खेल पाएंगी किन्तु अभी नहीं | 11 वर्षों के बाद गोपियाँ अपने घर, पति और बच्चों में व्यस्त होने लगती हैं | गोपियाँ श्री कृष्ण जी को पर पुरुष और स्वयं को कुलवंती नार बुलाते हुए श्री कृष्ण जी से कहती हैं कि आपके बांसुरी बजाने की वजह से हम खुद को रोक नहीं पातीं और आपके पीछे दौड़ी चली आती हैं और श्री कृष्ण जी को बांसुरी बजाने से मना कर देती हैं | अब श्री कृष्ण जी 52 दिन तक न तो बांसुरी बजाते हैं और न ही सखियाँ उनसे मिलने आती हैं |

52 दिन के वियोग की आवश्यकता:-

1. यह वियोग इसलिए ज़रूरी था क्योंकि श्री अक्षरब्रह्म जी और श्री श्यामा जी सहित सभी सखियाँ खेल में मग्न हो गए थे | इन दोनों को स्वप्न की बुद्धि वाले ब्रह्माण्ड में होने की वजह से मूल वचनों की स्मृति नहीं रही |

तब धाम धनिऐं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 33

2. इसका दूसरा कारण यह भी था कि श्री राजजी हमें रास में अत्यधिक आनंद देने वाले थे और वियोग के बिना प्रेम की लीला का आनंद नहीं आ सकता।

52 दिन के वियोग के पश्चात्:-

52 दिन के बाद श्री कृष्ण जी वृन्दावन (कालमाया में) के उस क्षेत्र में पहुँच गए जहाँ पर वह हमेशा सायंकाल में बांसुरी बजाते थे, लेकिन आज श्री कृष्ण जी ने यहाँ पर बांसुरी नहीं बजायी। उन्होंने बलभद्र जी, कल्याण जी एवं अन्य ग्वाल बालकों को गायों सहित गोकुल भेज दिया तथा स्वयं योगमाया के ब्रह्माण्ड में चले गए, जहाँ उन्होंने योगमाया की शक्ति से नित्य वृन्दावन की रचना की।

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन॥
श्री कलश हिंदुस्तानी प्र. 19 चौ. 62

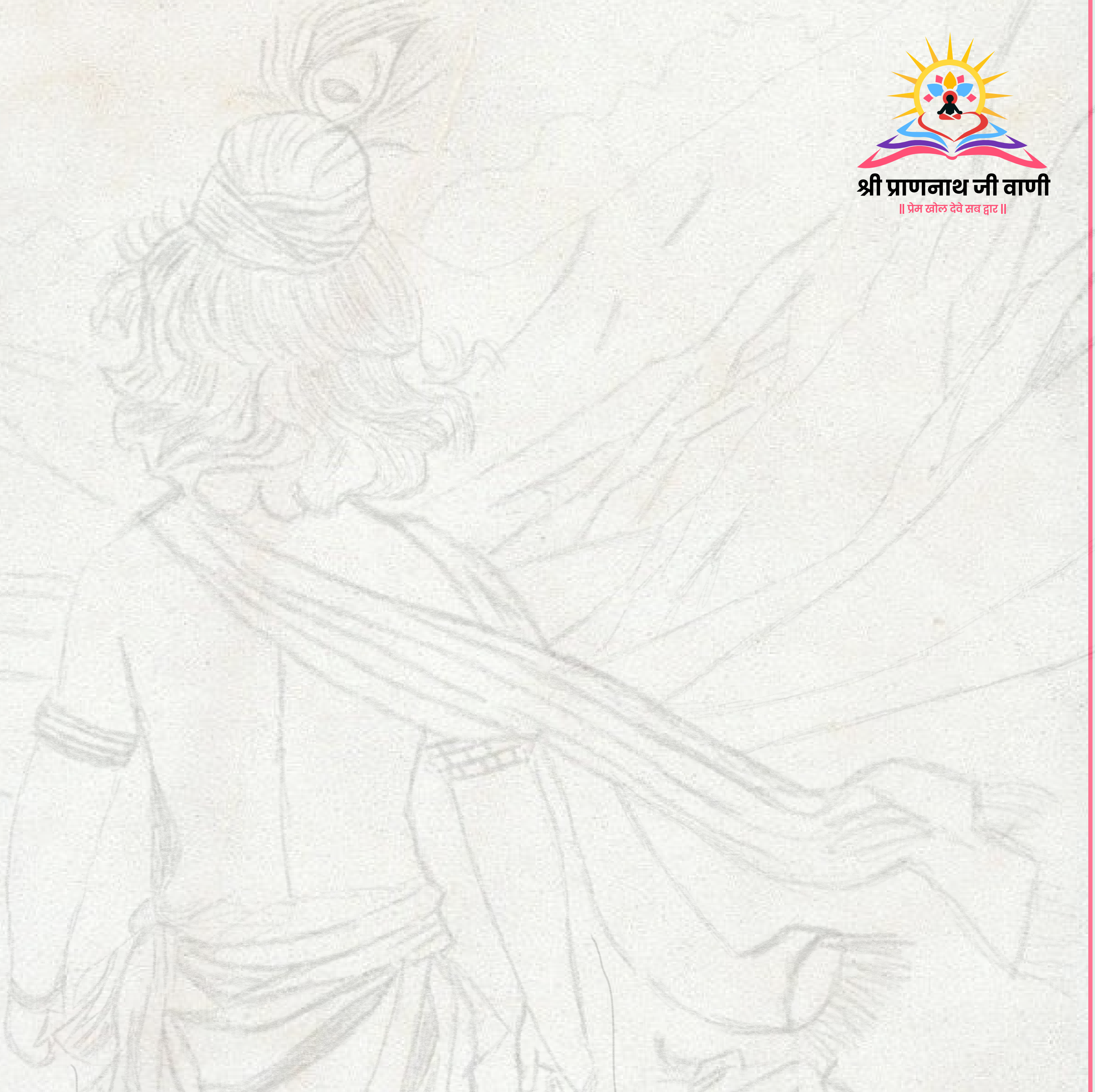

अध्याय 3

सखियों का कालमाया से योगमाया में प्रस्थान

अध्याय 3 : सखियों का कालमाया से योगमाया में प्रस्थान

योगमाया हमारे धनी के सत अंग श्री अक्षरब्रह्म जी के अंतःकरण की अर्धांगिनी है | श्री अक्षरब्रह्म जी के अंतःकरण के चार भाग हैं और इन चारों भागों में अलग-अलग माया कार्य करती हैं | श्री अक्षरब्रह्म जी के अंतःकरण के चार भाग और उनमें कार्य करने वाली माया इस प्रकार हैं :-

1. **सत्स्वरूप ब्रह्म (अहंकार का स्वरूप):- मूल माया**
2. **केवल ब्रह्म (बुद्धि का स्वरूप):- आनंद माया**
3. **सबलिक ब्रह्म (चित्त का स्वरूप):- चिद्रुप माया**
4. **अव्याकृत ब्रह्म (मन का स्वरूप):- सद्रुप माया**

सखियों का कालमाया (ब्रज मंडल) के ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाना :-

हमारे धनी ने योगमाया के केवलब्रह्म में जाकर अति सुन्दर किशोर स्वरुप (श्री बांके बिहारी जी का) धारण किया और अति मनमोहक बांसुरी बजायी | इस बांसुरी की मीठी ध्वनि जैसे ही सखियों ने सुनी तो उन्होंने अपने तन त्याग दिए और अपने धनी के पास योगमाया में पहुँच गयीं | सखियाँ जिस क्रम में अपने तनों का त्याग करके योगमाया में पहुंचीं वह इस प्रकार है:-

1. तामसी सखियाँ:- तामसी सखियों का अर्थ क्रोध वाली सखियों से नहीं है, बल्कि वो सखियाँ जो तुरंत ही निर्णय लेती हैं और जो बल वाली सखियाँ हैं | अब जैसे ही उन्होंने श्री कृष्ण जी की बांसुरी की मधुर ध्वनि सुनी उन्होंने तत्क्षण अपने प्राण त्याग दिए और धनी के पास योगमाया में पहुँच गयीं |

2. राजसी सखियाँ:- ये वो सखियाँ हैं जो अपने धनी से मिलने से पहले थोड़ा श्रृंगार करना चाहती हैं | अब जैसे ही इन सखियों ने बांसुरी की आवाज़ सुनी, ये धनी से मिलने के लिए इतनी व्याकुल हो गयीं कि इन्हें खुद की कोई सुध ही न रही और वे सारा श्रृंगार उल्टा सीधा (हाथों के आभूषण पैरों में, गले के हाथों में...) करने लगीं | और फिर ये भी अपने तन छोड़कर पहुँच गयीं अपने पिया के पास योगमाया में |

3. स्वांतसी सखियाँ:- इन सखियों को कालमाया के रिश्ते-नातों, मान मर्यादा की बहुत फ़िक्र होती है | जब इन सखियों ने बांसुरी की आवाज़ सुनी तो ये थोड़ा सोच विचार करने लगीं कि अगर मेरे पति को, घर वालों को पता लग गया तो वे क्या कहेंगे | इतने में इनके पति और घर वालों तक भी ये बात पहुँच गयी थी कि ब्रज में सखियाँ अपने तनों का त्याग कर रही हैं और अब इन्हें भी चिंता हो गयी कि कहीं इनकी पत्नियां भी तन न त्याग दें | इसलिए वे उन्हें घरों में बंद कर देते हैं | और अंत में विरहा में तड़प-तड़प कर इन सखियों ने भी अपने तन त्याग दिए और योगमाया में अपने धनी के पास पहुँच गयीं |

बाँसुरी की मनमोहक ध्वनि सुनते ही 24000 **कुमारिका सखियों** ने भी अपना तन छोड़ दिया और इस संसार को छोड़कर नित्य वृंदावन में पहुँच गईं

(सखियों के योगमाया में पहुँचने के पश्चात् कालमाया के इस ब्रह्माण्ड का लय कर दिया गया |) योगमाया में धारण किये गए नूरी और किशोर तन तथा उनमें विराजित शक्तियां इस प्रकार हैं :-

श्री राज जी:-
नूरी तन का नाम:- श्री कृष्ण जी (बांके बिहारी/रास बिहारी)
जीव :- × (कोई जीव नहीं)
आतम :- श्री अक्षरब्रह्म जी
आवेश :- श्री राजजी का आवेश + जोश (श्री अक्षरब्रह्म जी का आवेश)

श्री श्यामा जी:-
नूरी तन का नाम :- श्री राधिका जी
जीव :- कालमाया (ब्रज मंडल) का वही जीव जो श्री राधिका जी के तन में था|
आतम :- श्री श्यामा जी

सखियाँ:-
तन :- 12000 नूरी तन
जीव :- 12000 जीव (कालमाया (ब्रज मंडल) के वही जीव जो सखियों के तन में थे)
सुरता :- 36000 सुरताएँ (प्रत्येक ब्रह्मसृष्टि के नूरी तन में 1 ब्रह्मसृष्टि की सुरता + 2 ईश्वरी सृष्टि की सुरता)

यद्यपि ब्रज लीला में श्री कृष्ण जी के जिस तन में बैठकर श्री राजजी के आवेश ने लीला की, उसमें श्री विष्णु भगवान का जीव अवश्य था, किन्तु रास में जिन श्री कृष्ण (बांके बिहारी) के तन में विराजमान होकर उन्होंने लीला की, वह स्वयं चैतन्य नूरी तन है और उसको जीवित रहने के लिए किसी जीव की आवश्यकता नहीं है |

रासलीला के समय नूरी तन जो **पियाजी** ने धारण किया था, उसमें श्री **अक्षरब्रह्मजी** की **आतम**, **धनीजी** का **आवेश** और **जोश** विद्यमान था| उस समय सखियों के एक एक नूरी तन में **ब्रह्मसृष्टियों** की **1-1 सुरता** अपने जीव के साथ थी और **2-2 ईश्वरी सृष्टि** की सुरता उसी तन में विद्यमान होकर रास लीला देख रही थी |

योगमाया में पहुँचने पर धनी जी के द्वारा सखियों को कहे गए उथले वचन और उन वचनों को सुन कर सखियों की अवस्था :-

जब सब सखियाँ कालमाया को छोड़कर योगमाया में पहुंचीं सभी सखियों को स्वतः ही नूरी तन प्रदान हो गए और वे पिया जी के नूरी व किशोर तन को देखकर उसी में मग्न हो गयीं | सखियाँ अपना **52 दिन का वियोग** भी भूल गयीं | अब श्री राजजी सखियों से कहते हैं-"हे सखियो, जो पतिव्रता स्त्री होती है वह किसी भी स्थिति में रात्रि के वक़्त अपने घर से बाहर नहीं निकलती | ब्रज में सब कुशल मंगल तो है न, इस समय यहाँ आने की क्या आवश्यकता पड़ गयी ? तुम्हारे सगे-सम्बन्धी जो भी इस बारे में सुनेंगे, तुम्हारी निंदा करेंगे | इसलिए अब तुम वापिस अपने निवास स्थान लौट जाओ|"

धनी के मुख से इस तरह के वचन सुनकर स्वांतसी सखियाँ उसी पल धरती पर गिर पड़ीं, राजसी सखियाँ तड़पने लगीं और तामसी सखियाँ अपने मन को दृढ़ करके खड़ीं रहीं | श्री इंद्रावती जी सब सखियों से कहती हैं कि अवश्य ही हमसे अपने धनी के प्रति प्रेम सेवा में कोई चूक हो गयी है तो ऐसे में धनी हमसे नाराज़ क्यों न हों ? और श्री इंद्रावती जी राजजी से कहती हैं-"आपको जो भी कहना है आप निस्संकोच कहिये |"

श्री राजजी सखियों से बहुत ही व्यंग्यात्मक भाव से कहते हैं-"वेद शास्त्रों में भी लिखा है कि यदि पति झगड़ालू हो, अँधा हो, रोग ग्रस्त हो, मूर्ख हो, भाग्यहीन हो, लंगड़ा हो, अज्ञानी हो तो भी कुलीन नारी का कर्तव्य है कि वह उसका परित्याग न करे | इसलिए सखियो अपने पति के पास लौट जाओ |"

इसके बाद सखियाँ श्री राजजी से कहती हैं-"आपके अनुसार अगर पति में अनंत अवगुण हों तब भी उसका परित्याग नहीं करना चाहिए, तो अब आप ही बताइए कि आप जैसे सर्वगुण संपन्न पति को भला हम कैसे छोड़ सकती हैं ? अब आप हमसे और कटु वचन न कहिये | हमने निश्चित रूप से पहचान लिया है कि हमारी आतम के एकमात्र प्रियतम तो केवल आप ही हैं | "

अब धनी जी कहते हैं कि मैं तो केवल आपकी परीक्षा ले रहा था कि कहीं माया की कोई इच्छा तो आपके अंदर बाकी नहीं रह गयी | इसके बाद धनी स्वयं मूर्छित पड़ी सखियों को प्रेमपूर्वक उठाकर गले से लगाते हैं, जिससे उनके सारे दुःख दूर हो गए | योगमाया में आकर हमें अपने धनी की पूर्ण पहचान हो गयी जो कि हमें ब्रज में नहीं थी | अपने धनी की पहचान किये बिना रासलीला का आनंद ले पाना संभव ही नहीं था | अब धनी आगे चलकर सखियों को नूरी नित्य वृन्दावन की शोभा दिखाते हैं |

अध्याय 4

रास का वर्णन

अध्याय 4 : रास का वर्णन

रास का वर्णन

नित्य वृन्दावन की अति सुन्दर शोभा:-

केवल ब्रह्म के नित्य वृन्दावन में जो रासलीला हुई, उसकी सम्पूर्ण सामग्री - सखियों के नूरी तन, वन, पसु-पंखी, जमुना जी इत्यादि का निर्माण आनंद योगमाया के द्वारा किया गया | अक्षरातीत के आवेश स्वरूप ने ब्रह्मात्माओं के साथ जिस नित्य वृन्दावन में लीला की वह नित्य वृन्दावन परमधाम से भी अलग है तथा कालमाया के इस ब्रह्माण्ड से भी अलग है |

एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार |
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार ||
श्री रास प्र. 10 चौ. 36

योगमाया की धरती के एक-एक कण में इतना तेज है कि उसके समक्ष इस संसार के करोड़ों सूर्यों और चन्द्रमा का प्रकाश भी फीका पड़ जाता है | जिस समय सखियों ने ब्रज में अपने तन छोड़े थे उस समय वहां पर रात्रि होने वाली थी या कह सकते हैं कि गोधूलि का समय था | और जब उन्होंने योगमाया में प्रवेश किया तब वहां पर शरद पूर्णिमा की रात्रि थी | श्री राजजी स्वयं आगे-आगे जाकर सम्पूर्ण वृन्दावन की अनुपम शोभा का वर्णन करते हैं |

धनी वहां के अनेक प्रकार के वृक्ष-लताओं जैसे अंगूर, अखरोट, आम, ताड़वन, इमली, अशोक, अंजीर, अनानास, चिरौंजी, शीशम, केसर, सौंफ, सुपारी, चन्दन, गुलमोहर इत्यादि स्वयं हमें दिखाते हैं | इसी प्रकार अनेक प्रकार के फूल जैसे चमेली, कुमुद, रजनीगंधा, गुलाब, कमल, मोगरा, हज़ार पंखुड़ी वाला गेंदे का फूल इत्यादि की लताओं ने संपूर्ण वृन्दावन का अलग ही श्रृंगार किया है | अनेक प्रकार के साग, फल, अन्न, कंदमूल दृष्टिगोचर हो रहे हैं | इस तरह से नित्य वृन्दावन अनंत शोभा को धारण किये हुए है | यहाँ पर आयी जमुना जी का तट बहुत ही सुन्दर है | वहां किनारे पर बैठने के लिए फूलों के अति सुन्दर महल बने हुए हैं | जमुना जी के दोनों किनारों पर वृक्षों की डालियाँ जल के ऊपर आयी हैं | इतने सुन्दर वातावरण में सब सखियों ने अपने धनी के साथ रास का भरपूर आनंद लिया |

रास में श्री श्यामाजी का अनुपम श्रृंगार :-

वस्त्रों की शोभा:-
घाघरा / लहंगा :- नीले रंग का (जिसमें 11 रंग का नाड़ा है)
साड़ी :- सेंदुरिया रंग की
कंचुकी / चोली :- श्याम (हल्के काले) रंग की
चरणों के आभूषण :- अनवट, बिछिया, झांझरी, घुंघरी, काम्बी, कड़ला
गले के आभूषण :-श्री श्यामा जी के गले में सात हारों (हीरा, पाच, मोती, सोना, कंचन, चीड़, कंठसरी) की शोभा आयी है।
हस्तकमल के आभूषण :-
अँगुलियों में :- अति सुन्दर जवाहरातों से जड़ी हुई अंगूठियां
कलाई में :- पोहोंची, नवघरी, नवचूड़, कंकनी
कर्ण में :- झुमकियां
नासिका में :- बेसर, खूँटी (कोका/पुंगरिया)
माथे की शोभा :- चौकोर बेंदा आया है और एक माथापट्टी आयी है, जिसमें 6 फूलों की शोभा है।
शीशकमल पर :- एक गोल आकृति की राखड़ी, मांग में सिन्दूर, मांग के दोनों तरफ मोतियों की लड़ियाँ और बहुत ही सुन्दर चोटी गुंथी है, जिसमें पांच फुमक आये हैं।
श्री श्यामा जी के मुख में पान का बीड़ा है।

श्री सुन्दरसाथ जी का श्रृंगार :-

रास में ब्रह्मात्माओं की शोभा एक सागर के समान है। इनकी शोभा ऐसी लगती है मानो करोड़ों सूर्य एक साथ ही उदय हो गए हों।

रास में श्री राजजी का अनुपम श्रृंगार :-

वस्त्रों की शोभा:-
सूथनी / चूड़ीदार पायजामा :- केसरिया रंग का (जिसमें 9 रंग का नाड़ा आया है)
पटोली :- पीले रंग की
(पटोली बिना सिला हुआ ऐसा वस्त्र है जो कि पटुके से अधिक चौड़ा होता है)
चरणों के आभूषण :- झांझरी, घुंघरी, काम्बी, कड़ला

गले के आभूषण :- 5 हार (2 हीरे के हार, 1 स्वर्ण का, 1 मोतियों का हार, 1 नगों से जड़ित हार)
कंधे पर :- सेंदुरिया रंग की पिछौरी
हस्तकमल के आभूषण :-
अँगुलियों में :- अति सुन्दर अंगूठियां
कलाई में :- कड़ली, पोहोंची
बाजू में :- बाजूबन्ध
कर्ण में :- कर्णफूल, खूँटी (कर्णफूल के ऊपर)
नासिका में :- बेसर की शोभा
कमर में :- लाल रंग की बांसुरी | बांसुरी के मुख पर नीला, मध्य में लाल, और किनारे पर आसमानी रंग है |
माथे पर :- तिलक (जिसमें नीले, पीले, लाल रंग की रेखाएं हैं), मध्य में लाल रंग की बिंदी है |
शीशकमल पर :- मुकुट
धनी के केशों की चोटी अलग ही प्रकार से गुंथी हुई है, चोटी के फुंदने में अनेक प्रकार के जवाहरात जड़े हैं और फुंदने में घेरकर घुंघरी भी आयी है |

श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि रास के इन वस्त्रों और आभूषणों का वर्णन यहाँ के शब्दों के अनुसार किया गया है, किन्तु योगमाया का यह श्रृंगार कुछ विशेष ही तत्व का है | बेहद मंडल (योगमाया) श्री अक्षरब्रह्म जी के हृदय का स्वरूप है | इसलिए यह त्रिगुणातीत, चैतन्य, अखंड और प्रकाशमयी है | मानवीय बुद्धि के लिए ग्राह्य बनाने हेतु इस नश्वर जगत की धातुओं से केवल उपमा दी गयी है | वहां के तो एक पत्ते की शोभा का वर्णन करना भी संभव नहीं है |

रास में धनी जी के संग रामतों की आनंदमयी लीला :-

रास का अर्थ है 'रस- आनंद की क्रीड़ा' | अक्षरातीत का हृदय अनंत प्रेम, सौंदर्य, आनंद, शांति का सागर है | जब वह अथाह सागर उमड़ने लगता है तो उसे कहते हैं रास होना | बाह्य रूप से देखने पर रामतें खेल की तरह ही लगती हैं, यदि इसे सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो यह पता लगेगा कि युगल स्वरूप और सखियों के बीच में जो प्रेम का आदान-प्रदान है, वो इन्हीं क्रीड़ाओं के माध्यम से सम्पादित होता है | इसमें हंसना, खेलना, दौड़ना सब कुछ शामिल है |

श्री अक्षरब्रह्म जी ने यही लीला देखने की इच्छा परमधाम में श्री राजजी से प्रकट की थी, जो कि रास के रूप में श्री राजजी ने इन्हें केवलब्रह्म में दिखाई। रास में कई प्रकार की रामतें खेली गयीं :- आँख मिचौनी की रामत, फुंदड़ी की रामत, भुलवनी की रामत, गढ़े की रामत, ताली बजाने की रामत, हाथ पकड़ कर घूमने की रामत, कोहनी की रामत, आम की रामत, उड़न खटोले की रामत, नृत्य की रामत।

इस प्रकार रास में अनेक रामतें हुईं और इन सब में जीतने की शोभा धनी अपनी अंगनाओं को देते गए। इन रामतों के दौरान मैना, कोयल भी अपने मधुर स्वरों में गूंजते हैं, कबूतर और चकोर पक्षी भी अत्यंत सुन्दर क्रीड़ा करते हैं, मृग, बन्दर, मोर चारों ओर उछल-कूद कर घूमते हैं और नाचते हैं। इन रामतों में धनी अपने **12000 रूप धारण कर** एक-एक सखी के साथ आनंदपूर्वक लीला करते हैं और सभी सखियों की इच्छा को पूर्ण करते हैं।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
सघली संगे रमिया रंगे, एक पिउ एक नारी॥
श्री रास प्र. 21 चौ. 8

अध्याय 5

श्री राजजी के अंतर्ध्यान की लीला

अध्याय 5 : श्री राजजी के अंतर्ध्यान की लीला

श्री राजजी के अंतर्ध्यान की लीला

वृन्दावन में रास की रामतें करते करते सब सखियाँ अलग अलग हो गयीं | पुनः जब वे एक स्थान पर एकत्रित हुईं, तो उन्हें अपने प्राण प्रियतम के दर्शन नहीं हुए अर्थात धनी जी अंतर्ध्यान हो गए |

धनी जी के अंतर्ध्यान होने के कारण:-

1. रास की रामतों के पश्चात् सब सखियों के मन में यह भाव आ गया कि श्री राजजी तो पूर्णतया हमारे वश में हो गए हैं - वह हमारी चोटी भी गूंथते हैं, यदि हमारे आभूषण भी ज़मीन पर गिर जाते हैं तो धनी वे भी उठाकर हमें पहना देते हैं | इस तरह सखियों के मन में बहुत अधिक मान आ गया |

2. केवलब्रह्म की भूमि नौ रसों की भूमि है-
   श्रृंगार, वियोग, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, अदभुत, शांत | तो यहाँ पर वियोग भी अवश्य होना था |

3. श्री अक्षरब्रह्म जी भी फरामोशी में होने के कारण यह समझने लगे थे कि यह लीला केवलब्रह्म में न होकर परमधाम में ही हो रही है | सब सखियाँ भी इस लीला में मग्न हो गयीं थीं, क्योंकि वे आधी नींद और आधी जाग्रत अवस्था में थीं (वह अवस्था जिसमें उन्हें अपने धनी की पहचान तो थी लेकिन उन्हें अपने असल घर की सुध नहीं थी |) इसलिए श्री अक्षरब्रह्म और सखियों दोनों को वास्तविकता का बोध करवाना भी आवश्यक था |

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत |
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर ||
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 41

जब धनी अपना आवेश और जोश श्री कृष्ण जी के तन से खींच लेते हैं तब श्री कृष्ण जी के तन में केवल श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम ही शेष रह जाती है | क्योंकि अब श्री कृष्ण जी के तन

में श्री राजजी का आवेश नहीं होता, इसलिए श्री कृष्ण जी का वह तन वहां होते हुए भी सखियों की दृष्टि से ओझल हो जाता है | अब धनी जी का आवेश और जोश योगमाया में ही श्री राधिका जी के तन में प्रवेश कर जाता है, लेकिन श्री श्यामा जी और सखियों को इसका बोध नहीं हो पाता कि धनी उन्हें छोड़कर कहीं गए ही नहीं हैं और वे धनी जी के अंतर्ध्यान होने से अत्यंत विरहा में डूब जाती हैं |

अंतर्ध्यान के समय श्री कृष्ण जी और राधिका जी के तन में शक्तियों का समावेश :-

श्री कृष्ण जी:-
तन :- श्री कृष्ण जी / बांके बिहारी जी / रास बिहारी जी
जीव :-× (कोई जीव नहीं)
आतम :- श्री अक्षरब्रह्म जी (कुछ क्षण)
आवेश :-× (कोई आवेश नहीं)

श्री राधिका जी:-
तन :- श्री राधिका जी
जीव :- ब्रजमंडल के राधिका जी का जीव
आतम :- श्री श्यामा जी
आवेश :- श्री राजजी का आवेश + जोश

श्री अक्षरब्रह्म जी का फरामोशी से जाग्रत अवस्था में आना :-
जब धनी जी श्री कृष्ण जी के तन से अपना आवेश खींच लेते हैं, उसके बाद भी कुछ क्षणों के लिए श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम श्री कृष्ण जी के तन में ही रहती है और श्री अक्षरब्रह्म जी आश्चर्यचकित हो उठते हैं कि- "मैं कहाँ हूँ ? मेरी वेशभूषा कैसी है ? यह कौन सा वन है और ये कौन सी सखियाँ हैं जो विरहा कर रही हैं?" इस प्रकार चौंककर श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम अपने मूल तन परमधाम में जाग्रत हो जाती है | और अब केवलब्रह्म में केवल श्री कृष्ण जी का तन ही शेष रह जाता है जिसमें कोई शक्ति नहीं होती | (न तो श्री राजजी का आवेश व जोश और न ही श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम)

कौन बन कौन सखियाँ कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम |
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध ||
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 42

जैसे ही श्री अक्षरब्रह्म जी अपने मूल तन में जागते हैं, उन्हें सब याद आ जाता है कि इस ब्रह्मलीला को देखने की इच्छा तो स्वयं उन्होंने ही श्री राजजी से की थी और यह ब्रह्मलीला श्री राजजी ने उन्हें ब्रजमंडल में ब्रजलीला और योगमाया में रासलीला के रूप में दिखाई। अब यह ब्रजलीला श्री अक्षरब्रह्म जी के हृदय में अंकित हो जाती है किन्तु अभी अखंड नहीं होती।

अंतर्ध्यान लीला के दौरान सखियों की विरहावस्था :-

निःसंदेह श्री कृष्ण जी का नूरी तन वहीं पर सखियों के सामने योगमाया में ही था, किन्तु श्री राजजी का आवेश उसमें न होने की वजह से वह तन सखियों की दृष्टि से ओझल हो जाता है और अपने धनी को अपने पास न पाकर सब सखियाँ दुःख और विरहा से व्याकुल हो उठती हैं। सब सखियाँ मिलकर विचार करके श्री श्यामा जी के पास पूछने जाती हैं कि धनी कहाँ हैं ? लेकिन श्री श्यामा जी भी सखियों को वन में मूर्छित अवस्था में मिलती हैं, जिससे सखियों का धैर्य टूट जाता है। ऐसे में कुछ सखियाँ बेसुध हो जाती हैं, कुछ सखियाँ विरहा में अत्यंत तड़पती हैं, और कुछ सखियों के नेत्रों से आंसुओं की अविरल धारा प्रवाहित होने लगती है, लेकिन कुछ सखियाँ अभी भी धैर्यपूर्वक खड़ी रहती हैं और मूर्छित पड़ी सखियों को हौसला देती हैं कि इस तरह शोक न करो, यह तो निश्चित है कि धनी हमें किसी भी अवस्था में छोड़ नहीं सकते, तो चलो धनी को संपूर्ण वृन्दावन में खोजते हैं। संपूर्ण वृन्दावन में देखने के बाद भी धनी उन्हें कहीं नहीं मिलते और वही वृन्दावन जो इतना सुन्दर प्रतीत हो रहा था, अपने प्रियतम के बिना अग्नि के समान लगने लगता है।

जब विरहा की पराकाष्ठा हो जाती है तो धनी जी की ही अंतःप्रेरणा से सखियों के मन में अनुकरण लीला करने का विचार आता है। अनुकरण लीला में श्री इंद्रावती जी 'श्री कृष्ण जी' का रूप ले लेती हैं, कोई सखी नन्द बाबा, कोई सखी यशोदा मईया, कोई पूतना और कई सखियाँ असुरों की वेशभूषा धारण कर लेती हैं। सब सखियों के मन में विरहा की इतनी प्रचंड ज्वाला धधक रही होती है, पर बाह्य रूप से वे ब्रज के अनेकों प्रसंगों का विधिवत अभिनय करती हैं। अपने प्राणेश्वर के विरहा में रोते हुए भी अभिनय में आनंदपूर्वक मग्न रहना ही प्रेम का वास्तविक लक्षण है ।

आनंदे रोतां रमिए एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम।
तेना उडी गया सर्वे नेम, रमतां कीधां कई चेहेन॥
श्री रास प्र. 33 चौ. 1

श्री कृष्ण जी का रूप धारण किये हुए श्री इंद्रावती जी ने जब बांसुरी अपने मुख पर रखी, तो उन्होंने अपने मन में विचार किया कि बांसुरी तो मैं आपका भेष लेकर बजा रही हूँ, पर मेरी लाज अब आप (धनी जी) ही के हाथ में है और अब आपको प्रकट होना ही पड़ेगा। अब श्री इंद्रावती सखी जैसे ही बांसुरी बजाती हैं, सब सखियों को यही प्रतीत होता है कि उनके प्राण प्रियतम लौट आये हैं और वे प्रियतम के प्रकट होने के गीत ज़ोर ज़ोर से गाने लगती हैं और इसी मनोहर घड़ी में ही सखियों के जीवन के आधार, उनके प्राणवल्लभ प्रकट हो जाते हैं। धनी जी को देखते ही सब सखियाँ दौड़कर पिया से लिपट जाती हैं। इसके बाद सब सखियों के मन में अपने धनी के साथ रास क्रीड़ा करने का अत्यधिक उत्साह होता है।

श्री प्राणनाथ जी वाणी
॥ प्रेम खोल देवे सब द्वार ॥

अध्याय 6

अंतर्ध्यान के पश्चात् की लीला

अध्याय 6 : अंतर्ध्यान के पश्चात् की लीला

अंतर्ध्यान के पश्चात्

ब्रह्मानंद और भजनानंद स्वरूप में अंतर :-

अंतर्ध्यान के पहले और अंतर्ध्यान के बाद प्रकट होने वाले स्वरूप में कोई अंतर नहीं है, सब श्रृंगार पहले जैसा ही है। लेकिन अंतर्ध्यान से पहले के स्वरूप को ब्रह्मानंद और अंतर्ध्यान के बाद के स्वरूप को भजनानंद कहा जाता है। यह दोनों ही स्वरूप सखियों को विरहा करने के पश्चात् ही मिले थे।

ब्रज लीला में सखियों ने बहुत सुख लिए, लेकिन रासलीला में मिलने वाले सुख ब्रजलीला से भी कई गुना अधिक थे। क्योंकि ब्रजलीला कालमाया में हुई थी और उस समय सब सखियाँ पूर्णतया नींद में थी अर्थात् न तो उन्हें श्री राजजी से अपने सम्बन्ध की पहचान थी और न ही अपने घर की सुध थी।

दूसरी तरफ रासलीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में हुई थी और यहाँ सखियों को अपने धनी जी की पहचान हो गयी थी, लेकिन अपने निजघर की सुध यहाँ भी नहीं थी। तो जितना अधिक सुख मिलता है उसके बाद विरहा भी उतना ही प्रगाढ़ हो जाता है।

जिस तरह रासलीला के सुख ब्रजलीला से अधिक थे उसी तरह योगमाया में रामतों के बाद होने वाला विरहा भी ब्रज में किये गए विरहा से अधिक था। और जब इतने विरहा के बाद धनी जी का स्वरूप सामने आया तो वह स्वरूप और भी कई गुना मोहित करने वाला लगा, जिसे भजनानंद कहा गया। इसमें प्रेम का नए ही प्रकार का विशेष श्रृंगार था अर्थात् इस स्वरूप में सखियों को प्रेम से तृप्त कर देने की प्रबल चाहना थी। इस स्वरूप के साथ लीला करके सखियों ने अपार सुख लिए।

आया सरुप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 46

श्री इंद्रावती जी और श्री केसर बाई जी का प्रेमपूर्ण विवाद :-

अंतर्ध्यान की लीला के पश्चात् सखियाँ धनी जी के साथ ऐसी रामतें करती हैं जिसमें कि वे उन्हें हर क्षण घेर कर रखती हैं कि कहीं ये छलिया फिर से उन्हें छोड़कर अदृश्य न हो जाए | सब सखियों के देखते-देखते श्री इंद्रावती जी धनी जी के साथ अनेक रामतें करती हैं |

श्री इंद्रावती जी

"मैंने धाम धनी का वरण कर लिया है, देखते हैं कि कौन सी सखी इनका हाथ मेरे से छुड़ा पाती है |"

श्री केसरबाई जी

"हे बहन, प्रियतम के साथ तुमने बहुत अधिक रामतें कर ली हैं, अब इन्हें छोड़ दो, जिससे कि हम भी पिया के साथ खेल रामतें कर सकें | "

श्री इंद्रावती जी

"मैं तो अपने प्रियतम को किसी भी स्थिति में नहीं छोडूंगी, तुम्हें जितनी भी शक्ति लगानी हो लगा लो, तुम केवल वाला जी का हाथ पकड़ सकती हो | मैं तो पहले से ही वाला जी के साथ लीला कर रही हूँ, इसलिए तुम वाला जी को नहीं ले सकती |"

श्री केसरबाई जी

"तुम्हें प्रियतम के साथ लीला करते हुए बहुत देर हो गयी है, ऐसी अवस्था में तुम मेरे प्राणों के आधार प्रियतम को क्यों नहीं छोड़ोगी?"

श्री इंद्रावती जी

"तुम्हारे सामने कोई दुर्बल, असहाय सखी नहीं है, चाहे तुम कितनी ही शक्ति क्यों न लगा लो, मेरे प्रियतम को मुझ से छुड़ा नहीं सकती।"

इन दोनों के बीच इस तरह के विवाद को देखकर श्री राजजी हंसने लगे। प्रियतम ने उन्हें शांत करने के लिए उन्हें सिखापन दिया, किन्तु कोई भी ज़रा भी झुकने के लिए तैयार नहीं थी। इसके बाद रामत को आनंदपूर्वक बनाने के लिए श्री राजजी ने सभी सखियों के साथ अलग-अलग रूप धारण करके लीला की, जिससे कि सब सखियाँ संतुष्ट हो गयीं। श्री केसरबाई जी सोचती हैं कि धनी जी केवल उनके पास हैं, इसी प्रकार श्री इंद्रावती जी को लगता है कि धनी जी केवल इनके साथ ही लीला कर रहे हैं, लेकिन प्रियतम ने तो 12000 रूप धारण कर सभी सखियों के साथ आनंदमयी लीला की।

इस लीला के पश्चात् जब श्री इंद्रावती जी और श्री केसरबाई जी आपस में मिलीं, तो दोनों ही मन ही मन लज्जित होकर इस प्रकार कहने लगीं कि हे सखी हमने आपस में विवाद करके कितना अनर्थ किया। दोनों बहुत ही उत्साहपूर्वक एक दूसरे के गले मिलीं। इस प्रकार पारस्परिक प्रेम की चाहत से उन्होंने अपने मन की मलिनता को ख़त्म कर दिया। सखियों के मन में जिस भी प्रकार की इच्छा थी, धनी जी ने सब इच्छाओं को पूर्ण किया।

वृन्दावन में रामतें करने के पश्चात् सब सखियाँ धनी जी के संग जमुना जी के किनारे आ गयीं। जल क्रीड़ा करने के लिए सब सखियों ने जमुना जी में प्रवेश किया और जल में प्रवेश करने से पहले सबके वस्त्र भी जल क्रीड़ा के माफिक बदल गए। जल में धनी जी के साथ अनेक प्रकार की क्रीड़ाएं करके सब सखियों ने अपार आनंद का अनुभव किया। जल क्रीड़ा के पश्चात् सुन्दरबाई, इंद्रावती, रत्नावती तथा लालबाई यमुना जी के जल से सर्वप्रथम बाहर निकलीं। तत्पश्चात् उन्होंने अपने सभी अंगों का श्रृंगार किया। इन चारों सखियों ने मिलकर श्री श्यामा जी को वस्त्र और आभूषण बहुत ही प्रेमपूर्वक पहनाए। इसी बीच प्रियतम ने आकर बहुत प्रेमभरी चाहत के साथ श्री श्यामा जी के बालों की चोटी गूंथी। इसके पश्चात् आशबाई, कमलावती, फूलबाई और चम्पावती इन चारों सखियों ने मिलकर एक साथ अपना श्रृंगार किया। और फिर इन चारों सखियों ने मिलकर श्री राजजी का श्रृंगार कराया। और बाकी सभी सखियों ने मिलकर एक दूसरे का श्रृंगार किया।

अब सब सखियाँ भोजन आरोगने के लिए अलग-अलग पंक्तियों में बैठ गयीं | श्री इंद्रावती जी 100 सखियों के साथ विधिवत भोजन परोसने के लिए तैयार हो गयीं और सबकी थालियों में अनेक प्रकार के व्यंजन परोसे गए | श्री राजजी ने सब सखियों के साथ भोजन ग्रहण किया |

जो सखियाँ भोजन परोस रहीं थीं, उन्हें स्वयं श्री राजजी ने अपने हाथों से भोजन परोसा और सबने पान का बीड़ा भी ग्रहण किया | भोजन ग्रहण करने के बाद सब सखियाँ श्री राजजी के पास उन्हें घेरकर बैठ गयीं और उनसे प्रेमपूर्वक वार्ता करने लगीं |

सखियों का श्री राजजी के साथ परमधाम की ओर प्रस्थान :-

धाम धनी के साथ प्रेमपूर्वक बातें करते हुए सब सखियों को विरहा के उन क्षणों की याद आ गयी, जिसमें उन्हें बहुत अधिक कष्ट हुआ था |

अब श्री इंद्रावती जी श्री राजजी से पूछती हैं –

"हमसे ऐसा कौन सा अपराध हुआ था कि आप हमें वृन्दावन में अकेले छोड़ गए थे, आपको तो उस विरहा के कष्ट का कोई अनुभव ही नहीं है |"

श्री राजजी सखियों से कहते हैं–

"मैंने तो एक पल के लिए भी कभी वृन्दावन को नहीं छोड़ा, मेरे और तुम्हारे बीच में एक वृक्ष आ गया था, जिसके कारण तुम मुझे देख न सकीं | हे सखियो ! मैं तुमसे कभी अलग हो ही नहीं सकता क्योंकि हमारी आत्मा एक ही है |"

इसके बाद श्री इंद्रावती जी को वो उथले वचन याद आते हैं, जो धनी जी ने सब सखियों को ब्रज छोड़कर योगमाया में आने पर कहे थे |

अब श्री इंद्रावती जी श्री राजजी से कहती हैं – "लगता है कि हमारा अनादि काल से चला आ रहा प्रेम का सम्बन्ध नहीं है, तभी तो आपने हमसे ऐसे उलाहने भरे वचन कहे थे |"

श्री इंद्रावती जी की बात सुनकर धनी जी कहते हैं :-

"हे सखियो ! इस तरह के वचन तो मैंने केवल तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए कहे थे कि कहीं तुम्हारे अंदर ब्रज की तरह माया का प्रवेश तो नहीं है | यदि माया का प्रवेश होता तो तुम मेरे साथ पूरी रात उमंग से भरकर रास का आनंद न ले पातीं | क्योंकि तुम्हारे अंदर माया की कोई आसक्ति नहीं थी उसी का परिणाम है कि मैं आज तुम्हारे पास हूँ |"

अब सखियाँ श्री राजजी से कहती हैं :-

"हे प्रियतम ! हमने आपको वृन्दावन में प्रत्येक स्थान पर खोजा, किन्तु आप हमें कहीं भी दिखाई नहीं दिए | अगर आप उस समय वृन्दावन में होते तो हमें विरहा का असहनीय दुःख क्यों भोगना पड़ता ? हमने वृन्दावन की हर लता के झुरमुट तक में आपको ढूँढा, विरहा के दुःख में हम सब अत्यधिक रोयीं, हमने बहुत सी युक्तियों से आपको खोजा, किन्तु आप किसी को भी किसी भी स्थान पर नहीं मिले और आप कह रहे हैं कि आप हमें छोड़कर कहीं नहीं गए थे | जब हम वृन्दावन में आपको खोज रहीं थीं तब आप हमारे सम्मुख क्यों नहीं आये ? अगर आप हमसे जुदा नहीं हुए थे तो आपने हमारी विरहावस्था की पुकार क्यों नहीं सुनी ? इतनी देर तक हमें बिलख-बिलख कर रोता देखना आपको सहन कैसे हुआ प्रियतम ? हम निश्चित रूप से यह कह सकतीं हैं कि आप वृन्दावन में तो कदापि नहीं थे | हम इतना कष्ट केवल इसीलिए सहन कर पायीं क्योंकि हम अपनी चेतना से आपका अनादि सम्बन्ध जानतीं थीं | हमें इस बात की आशा थी कि आप हमें कभी नहीं छोड़ सकते, अन्यथा हम उसी क्षण अपना तन त्याग देतीं |"
(सखियाँ धनी जी के आवेश स्वरूप को श्री श्यामा जी के हृदय में विराजमान होने के रहस्य को समझ ही नहीं पायीं थीं, क्योंकि उस समय सखियाँ पूर्ण जाग्रति की अवस्था में नहीं थीं |)

श्री राजजी सखियों से :-

"सखियो तुम पूर्णतया सत्य कह रही हो | जब हम रास की रामतें खेल रहे थे, तब हमारे बीच में केवल एक क्षण के लिए एक वृक्ष सामने आ गया था |
तुम उस समय प्रेम की गहनता में डूबी हुईं थीं, इसलिए एक क्षण का वियोग भी तुम्हें युगों के समान प्रतीत हुआ | इस प्रकार तुमने बहुत अधिक दुःख देखा | अब धनी जी कहते हैं कि सखियो तुम्हें जो विरहा का कष्ट हुआ है, उस से भी अधिक कष्ट मुझे हुआ है | श्री राजजी ब्रज से रास मंडल में जाने के समय की याद दिलाते हुए कहते हैं कि सखियो ! जब मैं कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड (केवलब्रह्म की भूमिका) में आया, तो मेरे आदेश से केवलब्रह्म की अर्धांगिनी आनंद योगमाया ने रास के लिए नित्य वृन्दावन की क्षण भर में ही रचना कर दी |
मेरे मन में तुमसे मिलने की अथाह तड़प थी | तुम्हें ब्रज से यहाँ तक बुलाने के लिए मैंने अपने हाथों में बांसुरी ली, किन्तु इतने समय का वियोग भी मेरे लिए बहुत कष्टकारी था | इस प्रकार धनी ने अपना विरहा सखियों के विरहा से अत्यधिक कष्टकारी बताकर सखियों का मन मुग्ध कर दिया |"

श्री इंद्रावती जी :-

"हे प्रियतम ! अब मैं आपसे केवल यही मांगती हूँ कि आप हमसे एक क्षण के लिए भी अलग न होइए | अब आप हमें उस घर में ले चलिए, जहाँ हम एक पल के लिए भी आपसे अलग न हों |"

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, खिण एक अलगां न थैए |
जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए ||
श्री रास प्र. 47 चौ. 43

हमने अपने धनी से परमधाम में दुःख का खेल देखने की इच्छा की थी, उसे धनी जी ने हमें ब्रज और रास में दिखा दिया तथा हमारे मन को रास की रामतों से आनंदित भी कर दिया | इसके पश्चात् धनी जी हमें अपने मूल घर परमधाम ले गए और श्री अक्षरब्रह्म जी भी अपने मूल तन (परमधाम में) जाग्रत हो गए | अर्थात श्री अक्षरब्रह्म जी, श्री श्यामा जी और सखियों की आतम अपने अपने मूल तन में चली गयी |

अध्याय 7

अखंड ब्रजलीला व रासलीला के रहस्य

अध्याय 7 : अखंड ब्रजलीला व रासलीला के रहस्य

अखंड ब्रजलीला व रासलीला

ब्रज व रास लीला कहाँ अखंड हुई?

जैसे ही श्री अक्षरब्रह्म जी अपने मूल तन में जाग्रत होते हैं, अब वह ब्रज और रास की लीला को अखंड करते हैं। रास खेली तो केवलब्रह्म (बुद्धि का स्वरूप) के अंदर किन्तु इसे अखंड श्री अक्षरब्रह्म जी के चित स्वरुप - सबलिक ब्रह्म के महाकारण में किया गया। ब्रजलीला को सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड किया गया।

अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो।
बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड॥
श्री प्रकास हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 49

इस प्रकार श्री अक्षरब्रह्म जी के चित में ब्रज लीला के अखंड हो जाने से सबलिक ब्रह्म का नाम सदाशिव चेतन पड़ गया। ब्रज और रास की ये दोनों लीलाएं ब्रह्मलीला कही जाती हैं, जो योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखंड हो गयी हैं (आज भी हो रही हैं)।

अखंड रास में सब तनों में शक्तियों का समावेश :-

श्री कृष्ण जी :-
नूरी तन :- श्री कृष्ण जी / श्री रास बिहारी जी / श्री बांके बिहारी जी
जीव :- × (कोई जीव नहीं)
आतम :-× (कोई आतम नहीं)
आवेश :-× (कोई आवेश नहीं)

श्री राधिका जी :-
नूरी तन :- श्री राधिका जी
जीव :- ब्रजमंडल (कालमाया) के राधिका जी का उत्तम जीव
आतम :- × (कोई आतम नहीं)

सखियाँ :-
नूरी तन :- 12000 सखियों के नूरी तन
जीव :- ब्रजमंडल (कालमाया) के गोपियों के उत्तम जीव
आतम :- × (कोई आतम नहीं)

परमधाम की आत्माएं ब्रज में गोपियों के तनों में जिन जीवों पर विराजमान हुईं थीं, वे जीव रास में अखंड हो गए और आत्माएं वापिस परमधाम पहुँच गयीं। ये **12000 सखियों** के नूरी तन आज भी अखंड रास में श्री कृष्ण जी (किशोर स्वरुप) और श्री राधिका जी के नूरी तनों के साथ लीला कर रहे हैं। श्री राधिका जी, सखियों के जीव ब्रजमंडल (कालमाया) में भी थे, इन जीवों ने योगमाया में रास का भी आनंद लिया और सबलिक ब्रह्म में अखंड हुई रास में इन जीवों को अखंडता भी मिल गयी।

रास के पश्चात् ईश्वरी सृष्टि की सुरता कहाँ गयीं?

श्री अक्षरब्रह्म जी ने विशेष रुप से इस खेल को देखने के लिए ही 24000 सुरताएँ धारण की थीं, जिन्हें ईश्वरी सृष्टि कहते हैं। योगमाया में रास खेलने के लिए 12000 ब्रह्मसृष्टियों के तनों में ही 24000 ईश्वरीसृष्टियों की सुरता ने प्रवेश किया था। रास खेलने के लिए ईश्वरी सृष्टि को अलग से कोई तन मिले ही नहीं थे। तो रास के पश्चात् सबकी आतम अपने मूल स्थान पर लौट गयी - ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम पहुँच गयीं, श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम भी अपने मूल स्थान अक्षरधाम में पहुँच गयी। इसी तरह ईश्वरीसृष्टि की सुरता भी अपने मूल स्थान योगमाया में सतस्वरुप ब्रह्म में चली गयीं।

ब्रज लीला कहाँ पर अखंड हुई? और उसमें कौन कौन अखंड हुआ?

ब्रजलीला 11 साल 52 दिन तक खेली तो कालमाया के ब्रह्माण्ड में गयी, लेकिन उसे योगमाया के सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड किया गया। ब्रजलीला में अखंड हुए तन और उनमें शक्तियों का समावेश इस प्रकार है :-
श्री कृष्ण जी :-
नूरी तन :- श्री कृष्ण जी / बाल मुकुंद जी (योगमाया का नूरी तन)
जीव :- विष्णु जी
आतम :- × (कोई आतम नहीं)
आवेश :-× (कोई आवेश नहीं)

श्री राधिका जी :-
नूरी तन :- श्री राधिका जी (योगमाया का नूरी तन)
जीव :-× (कोई जीव नहीं)
आतम :-× (कोई आतम नहीं)

सखियाँ :-
तन :- 12000 नूरी तन (योगमाया के नूरी तन)
जीव :- × (कोई जीव नहीं)
आतम :-× (कोई आतम नहीं)

कुमारिका सखियाँ :-
तन :- 24000 (योगमाया के नूरी तन)
जीव :- 24000 जीव (जो कालमाया के ब्रज मंडल में कुमारिका सखियों के तन में थे)
सुरता :-× (कोई सुरता नहीं)

जीवसृष्टि:-
ब्रजमंडल में जो जीवसृष्टि श्री कृष्ण जी के सानिध्य में आयी थीं, उन्हें भी ब्रजलीला (सबलिक ब्रह्म) में अखंड कर दिया गया |
तन :- नूरी तन (योगमाया के)
जीव :- कालमाया के ब्रजमंडल के जीव
आतम :-× (कोई आतम नहीं)

कालमाया के ब्रजमंडल के तन योगमाया के ब्रह्माण्ड में प्रवेश नहीं कर सकते, इसलिए कालमाया के तन तो नष्ट हो गए और जो ब्रजलीला सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड हुई, वहां पर श्री कृष्ण जी (बाल स्वरुप), राधिका जी, सखियों और जीवसृष्टि के योगमाया के नूरी तन लीला कर रहे हैं | योगमाया का ब्रह्माण्ड कालमाया के ब्रह्माण्ड से बहुत अलग है, जहाँ पर किसी तन को कार्यशील बनाने के लिए उसमें जीव का होना आवश्यक नहीं है | यह सब नूरी तन आज भी अखंड रूप से लीला कर रहे हैं |

रासलीला के दौरान सब जीवों का स्थान :-
प्रलय के पश्चात् जब ब्रह्मसृष्टियों के जीव भी उनकी सुरता के साथ रास खेलने के लिए केवल ब्रह्म में चले गए, उस समय अन्य सभी जीव जो ब्रज मंडल में थे, जिनमें ईश्वरीसृष्टि

के जीव भी हैं, श्री कृष्ण जी के सानिध्य में आये जीव भी और अन्य जीवसृष्टि के जीव जो श्री कृष्ण जी के सानिध्य में नहीं आ पाए अर्थात राधिका जी और ब्रह्मसृष्टियों के जीवों को छोड़कर चौदह लोक के सभी जीवों को कारण प्रकृति में सुषुप्ति अवस्था में रख दिया गया। और रासलीला को अखंड करने के बाद जब ब्रजलीला को अखंड किया गया तो इनमें से ईश्वरीसृष्टि के जीवों को और जो जीवसृष्टि श्री कृष्ण जी के सानिध्य में आयी थी उन्हें सबलिक ब्रह्म के कारण में ब्रजलीला में अखंड कर दिया गया।

अध्याय 8

प्रतिबिम्ब लीला के गुह्य भेद

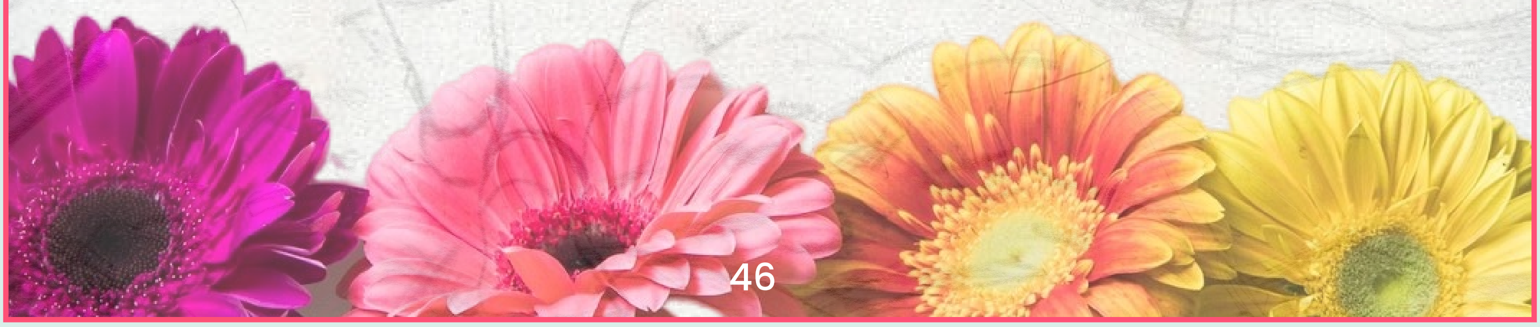

अध्याय 8 : प्रतिबिम्ब लीला के गुह्य भेद

प्रतिबिम्ब रासलीला के गुझ रहस्य

जैसे ही ब्रज से रास में जाने के लिए सखियों ने तन छोड़े, उसी क्षण ब्रज ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया गया | इसमें केवल उस एक ब्रह्माण्ड (चौदह लोकों) का प्रलय किया गया, जिस ब्रह्माण्ड का भाग ब्रज मंडल था |

इस तरह के असंख्यों ब्रह्माण्ड और भी हैं, लेकिन उनका प्रलय नहीं किया गया | अगर शेष भी सभी ब्रह्माण्डों का प्रलय किया जाता, तो उसे महाप्रलय कहा जाता | रास के पश्चात् योगमाया में रासलीला और ब्रज लीला को अखंड कर दिया गया और जो जीव उसमें अखंड हुए, वे इस प्रकार हैं :-

1. ब्रह्मसृष्टियों के जीव (रास में अखंड हुए)
2. ईश्वरीसृष्टियों के जीव (ब्रजलीला में अखंड हुए)
3. जीव सृष्टि (जो श्री कृष्ण जी के सानिध्य में आयी) के जीव (ब्रजलीला में अखंड हुए)

ब्रजलीला और रासलीला के अखंड होने के बाद कालमाया में ब्रज के नए ब्रह्माण्ड की रचना की जाती है और जहाँ वृन्दावन (कालमाया) में श्री कृष्ण जी बांसुरी बजाते थे, वहीं पर वृन्दावन में आकर श्री कृष्ण जी बांसुरी बजाते हैं और यहीं से प्रतिबिम्ब की लीला शुरू हो जाती है | परब्रह्म के आदेश से ये नया ब्रह्माण्ड इतने चमत्कारिक ढंग से बना कि इसमें रहने वालों ने यही धारणा बना ली कि हम तो उसी पहले वाले ब्रह्माण्ड के ही रहने वाले हैं, हम तो इसमें बहुत पहले से ही रहते आ रहे हैं |

प्रतिबिम्ब रास लीला श्री कृष्ण जी, राधिका जी और सखियों के रूप में किसने खेली :-
श्री कृष्ण जी :-
तन :- श्री कृष्ण जी का (11 साल 52 दिन का कालमाया का नया तन)
जीव :- विष्णु जी का जीव
आतम:-× कोई आतम नहीं
आवेश / शक्ति :- सबलिक ब्रह्म के महाकारण में अखंड हुई रास के रासबिहारी जी के तन का आवेश

श्री राधिका जी :-

तन :- राधिका जी का (कालमाया का नया तन)

जीव :- कालमाया का नया जीव

सुरता :- वेदऋचा सखी की

वेदऋचा सखियाँ :-प्रतिबिम्ब लीला में **12000** ब्रह्मसृष्टियों के स्थान पर अब जिन सखियों ने श्री कृष्ण जी के साथ लीला की, उनमें वेदऋचा सखियों की सुरता आयी है, इसलिए अब इन्हें वेदऋचा सखियाँ कहा जाएगा |

तन :-12000 नए कालमाया के तन

जीव :- नए जीव कालमाया के

सुरता :- वेदऋचा सखियों की

प्रतिबिम्ब की सखियाँ :-प्रतिबिम्ब लीला में **24000** ईश्वरीसृष्टियों के स्थान पर अब जिन सखियों ने श्री कृष्ण जी के साथ लीला की, उनमें सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड हुए ईश्वरीसृष्टि के जीव सुरता रूप में आए हैं, और अब इन्हें प्रतिबिम्ब की सखियाँ कहा जाएगा |

तन :-24000 कालमाया के नए तन

जीव :- कालमाया के नए जीव

सुरता :- सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड हुए ईश्वरी सृष्टि के जीव सुरता रूप में |

जीव सृष्टि :- वह जीव सृष्टि जो श्री कृष्ण जी के सानिध्य में आयी थी और जिनके जीव सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड हो गए थे |

तन :- कालमाया के नए तन

जीव :- नए जीव कालमाया के

सुरता :-× कोई सुरता नहीं

रास जो कि सबलिक ब्रह्म के महाकारण में और ब्रजलीला जो कि सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड हुई, उसका प्रतिबिम्ब सबलिक ब्रह्म के स्थूल (सबलिक ब्रह्म का स्थूल = अव्याकृत ब्रह्म का महाकारण) में भी पड़ा | अव्याकृत ब्रह्म के स्थूल में वेदों का भी स्थान है | ये वेद अपने ज्ञान का प्रकाश लेकर हर ब्रह्माण्ड में अवश्य आते हैं | और जब वेदों ने रासलीला का प्रतिबिम्ब अव्याकृत ब्रह्म में पड़ता देखा तो वेदों के मन में भी इस लीला को देखने की इच्छा हुई क्योंकि उन्होंने तो ऐसी प्रेममयी लीला कभी देखी ही नहीं थी |

अखंड रास का प्रतिबिम्ब जो अव्याकृत ब्रह्म के महाकारण में भी पड़ा, इसी प्रतिबिम्ब वाले रास बिहारी जी के स्वरूप ने वेदों को आदेश दिया कि ये जो प्रेममयी लीला देखने की इच्छा आपके मन में आयी है, उसे पूर्ण करने के लिए आप सुरता रूप धारण कीजिये। और जब वेदों ने सुरता रूप धारण किया तब उन्हें वेदऋचा सखियाँ कहा गया। इन्हीं को कालमाया में 12000 गोपियों के तनों में उतारा गया। और 24000 प्रतिबिम्ब की सखियों के रूप में उन ईश्वरी सृष्टि के जीवों को सुरता रूप में उतारा गया जो कि सबलिक ब्रह्म के कारण में ब्रजलीला में अखंड हैं।

इन अखंड हुए जीवों की सुरता को भी इसलिए कालमाया में उतारा गया क्योंकि कुमारिका सखियों के जीवों ने ब्रज (कालमाया) में श्री कृष्ण जी के संग प्रेममयी लीला को खेलने की मांग की थी और इन जीवों ने खूब व्रत भी रखे थे। ये जीव अखंड रास को खेलने के लिए केवल ब्रह्म में भी नहीं गए थे, वहां केवल ईश्वरीसृष्टि की सुरता ही गयी थी। इसलिए इन जीवों की इच्छा पूर्ति के लिए इन्हें प्रतिबिम्ब की रास खेलने के लिए कालमाया में लाया गया। प्रलय के बाद जब ब्रज का नया ब्रह्माण्ड बना, उसे प्रतिबिम्ब की रास की रात्रि से ही शुरू किया गया और इस एक रात्रि को 6 महीने लम्बी कर दिया गया। क्योंकि आदिनारायण जी के बनाये कालमाया के ब्रह्माण्ड में पहली बार इस तरह की प्रेममयी लीला हो रही थी। इसलिए उन्होंने इस एक रात्रि को 6 महीने लम्बा कर दिया और इसका आनंद लेते रहे।

इस छः महीने के बराबर की रात्रि के पश्चात् सब सखियाँ अपने-अपने घरों में जाकर सो जाती हैं। सब गोप सुबह जब उठते हैं तो अपनी-अपनी पत्नियों को अपने पास सोया हुआ पाते हैं और उनको याद ही नहीं रहता कि शाम को कैसे बांसुरी की ध्वनि सुनते ही सब सखियों ने अपने तनों का त्याग कर दिया था। ब्रज का ब्रह्माण्ड बिल्कुल पहले के जैसे ही चलने लगता है जैसे कि वह प्रलय से पहले चलता था। क्योंकि तन तो ऊपर से पहले की तरह ही प्रतीत हो रहे थे लेकिन अंदर कैसे सब शक्तियां और जीव बदल गए हैं, इसका आभास किसी को भी नहीं हो पाता।

टिप्पणी: योगमाया में प्रवेश करने के बाद जीव जीवरूप नहीं रह जाते, बल्कि वह भी सुरता रूप हो जाते हैं। ईश्वरीसृष्टि के जो जीव ब्रजलीला में अखंड हुए, वे भी सुरता रूप हो गए और वही प्रतिबिम्ब रासलीला में कुमारिका सखियों के स्थान पर आए।

प्रतिबिम्ब की रास क्यों खेली गयी?

प्रतिबिम्ब की रास को खेलने के कारण इस प्रकार हैं :-

1. वेदों (वेदऋचा सखियों) की इच्छा को पूर्ण करने के लिए।
2. 24000 ईश्वरीसृष्टि के जीवों की इच्छा को पूरा करने के लिए।
3. इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में आम खलक या जीवसृष्टि को तो पता ही नहीं कि रासलीला खेली गयी है क्योंकि वह तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में हुई थी। तो जीवसृष्टि को भी विश्वास दिलाने के लिए कि रासलीला खेली गयी है या इस प्रकार की प्रेममयी लीला हुई है, इसे कालमाया में प्रतिबिम्ब की रास के रूप में खेला गया। ताकि जब रास के बारे में ग्रंथों में लिखा जाये तो उन्हें भी इसका आभास हो सके।

जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल ॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 37 चौ. 56

श्री राधिका जी, सखियों और जीवसृष्टि में नए जीव कहाँ से आये?

जो जीवसृष्टि श्री कृष्ण जी के सानिध्य में नहीं आ पायी, उन्हें इस नए ब्रह्माण्ड की रचना होते ही यहाँ बने नए तनों में भेज दिया गया। लेकिन इस नए ब्रह्माण्ड में कुछ जीव कम हो गए जो कि योगमाया के ब्रह्माण्ड में रासलीला और ब्रजलीला में अखंड हो गए थे।

इसलिए श्री राधिका जी, वेदऋचा सखियों (12000), प्रतिबिम्ब की सखियों (24000) और अन्य जीवसृष्टि (जो अखंड हो गयी) के कालमाया के नए बने हुए तनों में नए जीव ही प्रवेश हुए। ईश्वरी सृष्टि के जीवों ने ब्रजमंडल का प्रलय होते हुए देखा था, जिस समय सब सखियाँ अपने तनों का त्याग कर रही थीं। इसके बाद ईश्वरीसृष्टि ने भी अपने तनों का त्याग किया था और इनकी सुरता रास खेलने के लिए केवलब्रह्म में योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुँच गयी थी।

जिस समय रास खेलने के लिए ईश्वरी सृष्टि की सुरता केवलब्रह्म में गयी थी, उस समय इनके जीव कारण प्रकृति में सुषुप्ति अवस्था में थे। और रासलीला को अखंड करने के बाद जब ब्रज लीला को अखंड किया गया तब इनके जीव सबलिक ब्रह्म के कारण में ब्रजलीला में अखंड हुए। और फिर इन्हीं जीवों की सुरता कालमाया में प्रतिबिम्ब लीला में 24000 प्रतिबिम्ब की सखियों में आयी। इसलिए प्रतिबिम्ब की सखियों को एक धुंधली सी याद थी कि हम तो अपने तन त्याग कर एक प्रकाशमयी ब्रह्माण्ड में पहुँच गयीं थीं, लेकिन अब हम वापिस कैसे आ गयीं। इस रहस्य को वे कभी भी समझ नहीं पायीं।

जब प्रतिबिम्ब की सखियों का ही संशय नहीं मिटा तो भला अन्य क्या कर सकते हैं ? ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त बेहद के गुह्य रहस्यों को और कौन जान सकता है ? इस संसार के जीव बेहद के गुह्य रहस्यों को समझने में पूर्णतया असमर्थ हैं। प्रतिबिम्ब की सखियाँ भ्रमवश यही मानतीं रहीं कि हमने ही रासलीला की थी तथा इस प्रतिबिम्ब लीला में भी हम ही लीला कर रहे हैं।

धोखा इनों का भी ना मिटया, तो कहा करे और।
बेहद वानी के माएने, क्यों होवे दूजे ठौर॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 31 चौ. 48

अध्याय 9

श्री कृष्ण त्रिधा लीला के तीन भाग

अध्याय 9 : श्री कृष्ण त्रिधा लीला के तीन भाग

त्रिधा लीला के तीन भाग :-

1. ब्रज मंडल में 11 साल 52 दिन की लीला | इसमें श्री राजजी का आवेश श्री कृष्ण जी के तन में लीला करता है |
2. 11 दिन की लीला, जिसमें 7 दिन गोकुल के और 4 दिन मथुरा के | इसमें योगमाया के रासबिहारी जी का आवेश श्री कृष्ण जी के तन में लीला करता है |
3. 112 वर्ष तक विष्णुमय श्री कृष्ण जी के तन से होने वाली लीला | इसमें श्री कृष्ण जी के तन में कोई आवेश नहीं होता, केवल विष्णु जी का जीव सब लीला करता है |

किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार |
प्रभास सब संघार के, जाए खोले बैकुंठ द्वार ||
श्री कलश हिंदुस्तानी प्र.18 चौ.23

रासलीला के प्रकार :-

1. सबसे पहले रास जो कि योगमाया में केवल ब्रह्म में खेली गयी | यह लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड की एक रात्रि में हुई |
2. जो रासलीला केवल ब्रह्म में खेली गयी, उसे सबलिक ब्रह्म के महाकारण में अखंड कर दिया गया | और यह लीला आज भी निरंतर रूप से चल रही है |
3. जो भी बात चित में आती है, वह स्वतः ही मन में भी आ जाती है | अर्थात जो लीला सबलिक ब्रह्म (चितस्वरुप) में अखंड हुई, वही अव्याकृत ब्रह्म (मनस्वरुप) में भी आ गयी | इसलिए अखंड हुई रास का प्रतिबिम्ब अव्याकृत ब्रह्म के महाकारण या सबलिक ब्रह्म के स्थूल में भी पड़ा |
4. प्रलय के बाद जब फिर से कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना की गयी, तब उसकी शुरुआत ही प्रतिबिम्ब रासलीला से की गयी |

त्रिधा लीला के दूसरे भाग में 11 दिन की लीला (सात दिन गोकुल और चार दिन मथुरा):-

7 दिन तक गोकुल में बिलकुल वैसे ही लीला चलती रही, जैसे प्रलय से पहले ब्रजमंडल में लीला चलती थी। सात दिन तक प्रतिबिम्ब और वेदऋचा सखियों के साथ गोकुल में प्रेम की लीला हुई। कंस के निर्देश पर श्री कृष्ण जी व बलराम जी को लेकर अक्रूर जी मथुरा में गए, जहाँ चार दिनों तक लीला हुई। 24000 कुमारिकाओं के जीव रूपी प्रतिबिम्ब की सखियों और 12000 वेदऋचाओं के साथ श्री कृष्ण जी के जिस स्वरूप ने 11 दिन (7 दिन गोकुल में, 4 दिन मथुरा में) लीला की, उनमें रासबिहारी जी का आवेश और विष्णु भगवान का जीव था।

खेले पिछले साथ में, सात दिन तांई।
अक्रूर चल्या बुलाए के, पोहोंचे मथुरा मांहीं ॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 31 चौ. 51

मथुरा जाकर चार दिन की लीला में श्री कृष्ण जी कुबलया-पीड़ नामक हाथी को मारते हैं, चाणूर मुष्टिक जैसे योद्धाओं का और कंस का वध करते हैं। इसके पश्चात् वे अपने नाना उग्रसेन जी को, अपने माता-पिता (देवकी और वसुदेव) को कारागार से मुक्त कराते हैं। कारागार से मुक्त करने के बाद वे अपने नाना उग्रसेन जी को सिंहासन पर बैठाकर उनका राज्याभिषेक करते हैं और अपने ग्वाले का भेष उतारकर राजसी वस्त्रों को पहन लेते हैं। जब ग्वालों का भेष उतारकर उन्होंने राजसी वस्त्रों को धारण किया, तो बेहद की शक्ति (रास बिहारी का आवेश) उनसे अलग हो गयी, तथा तब वे मात्र विष्णु के अवतार रूप ही रह गए। उसी क्षण यह दूसरी लीला (श्री कृष्ण त्रिधा लीला का दूसरा भाग) वहां सम्पन्न हो जाती है।

टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार।
छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थें अवतार ॥
श्री प्रकाश हिंदुस्तानी प्र. 31 चौ. 53

त्रिधा लीला का तीसरा भाग :-

श्री कृष्ण जी के तन में शक्तियों का समावेश :-

तन :- श्री कृष्ण जी का कालमाया का तन
जीव :- विष्णु जी का
आवेश :-× कोई आवेश नहीं

श्री राधिका जी में शक्तियों का समावेश :-
तन:- राधिका जी का कालमाया का तन
जीव :- कालमाया का जीव
सुरता :- वेदऋचा सखी की
आवेश :- रास बिहारी जी का (श्री कृष्ण जी के तन से निकल कर श्री राधिका जी में प्रवेश कर जाता है)

जैसे ही श्री कृष्ण जी राजसी वस्त्र धारण करते हैं, रासबिहारी जी का आवेश या शक्ति श्री कृष्ण जी के तन से निकलकर गोकुल में राधिका जी के तन में प्रवेश कर जाती है। लेकिन राधिका जी और सखियों को इसका आभास नहीं हो पाता। जैसे कि योगमाया में अंतर्ध्यान लीला के दौरान श्री राज जी का आवेश श्री श्यामा जी में प्रवेश कर जाती है और उन्हें ज्ञात नहीं होता। (इसी तरह इस जागनी ब्रह्माण्ड में धनी जी का आवेश सूक्ष्म रूप में हर आतम के अंदर है, लेकिन विरहा के बिना इसका अहसास नहीं हो पाता।) क्योंकि राधिका जी और सब सखियों को रास बिहारी जी की शक्ति का आभास नहीं हो पाता, इसलिए वे 100 वर्षों तक उनके विरहा में तड़पती रहीं।

इस तरह 100 वर्षों तक विरहा में तड़पने के पश्चात् वेदऋचा सखियाँ योगमाया में अव्याकृत ब्रह्म के महाकारण के शुद्ध कारण में पहुँच गईं, जहाँ पर ब्रजलीला का प्रतिबिंब पड़ रहा है और ईश्वरी सृष्टि के जीवों की सुरता वापिस अपने स्थान यानि कि सबलिक ब्रह्म के कारण में अखंड ब्रजलीला में चली गयीं और रास बिहारी जी का आवेश अपने स्थान सबलिक ब्रह्म के महाकारण में पहुँच गया।

जन्म के समय श्री कृष्ण जी को श्री विष्णु भगवान जी का अवतार क्यों नहीं माना जा सकता?

विष्णु भगवान ने वसुदेव और देवकी को पूर्व जन्मों की याद दिलाकर स्पष्ट किया कि अब जिस बालक का जन्म होना है, उसे नन्द जी के घर किस प्रकार पहुँचाना है। जब श्री कृष्ण जी का जन्म होता है, तब उनमें केवल विष्णु जी का जीव ही नहीं होता, बल्कि इस बालक में अखंड धाम की शक्ति भी होती है। अर्थात उनमें श्री अक्षरब्रह्म जी का आवेश (परब्रह्म का जोश) भी प्रविष्ट हो जाता है।

इसीलिए उन्हें केवल विष्णु भगवान जी का अवतार नहीं कहा जा सकता। और जैसे ही वसुदेव जी श्री कृष्ण जी को नन्द जी के घर पहुंचाते हैं, वहां आते ही श्री कृष्ण जी के तन में श्री अक्षरब्रह्म जी की आतम और परब्रह्म का आवेश प्रवेश कर जाते हैं।

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार॥
श्री कलश हिंदुस्तानी प्र. 18 चौ. 14

श्री महामति जी की आत्मा कहती हैं कि हे साथ जी! अब आप जाग्रत होकर आत्म जाग्रति के सुखों का रसपान कीजिये। इन सुखों को लेने में ब्रह्मसृष्टियाँ ही सक्षम हैं। यदि आप अपनी आत्मा को जाग्रत कर लेते हैं, तो इसी संसार में ब्रज, रास, श्री देवचन्द्र जी के तन से हुई लीला एवं परमधाम की लीला का प्रत्यक्ष सुख प्राप्त कर सकते हैं। और ये सारे सुख केवल चितवनि के द्वारा ही पाए जा सकते हैं।

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग॥
श्री कलश हिंदुस्तानी प्र. 23 चौ. 1

हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद!

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया श्री प्राणनाथ जी वाणी **चैनल** की प्लेलिस्ट '**श्री कृष्ण त्रिधा लीला**' पर अवश्य जाएँ।

ShriPrannathJiVani

Shri Prannath Ji Vani

shriprannathjivani@gmail.com

श्री प्राणनाथ जी वाणी

|| प्रेम खोल देवे सब द्वार ||